राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

पुरानी सलवार से मिलेगा...8

दैनिक बुद्ध का संदेश 9795951917,9415163471 @budhakasandesh budhakasandeshnews@gmail.com www.budhakasandesh.com

सोमवार, 26 सितंबर 2022 सिद्धार्थनगर संस्करण www.budhakasandesh.com वर्ष: 09 अंक: 277 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 सम्पादक : राजेश शर्मा उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

28 सितंबर को अमृत महोत्सव का विशेष दिन मन की बात में बोले पीएम: शहीद भगत सिंह के नाम पर होगा चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नामकरण

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक बार फिर मन की बात कार्यक्रम के जरिए लोगों तक अपनी बात पहुंचाई। इस कार्यक्रम के 93वें एपिसोड में पीएम मोदी ने कहा कि भगत सिंह जी की जयंती के ठीक पहले उन्हें श्रद्धांजलि स्वरुप चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नाम अब शहीद भगत सिंह जी के नाम पर रखा जाएगा। पीएम मोदी ने कहा कि 28 सितंबर को अमृत महोत्सव का एक विशेष दिन आ रहा है। इन दिन हम भारत मां के वीर सपूत भगत सिंह की जयंती मनाएंगे। भगत सिंह की जयंती के ठीक पहले उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप एक एक महत्वपूर्ण निर्णय किया गया है। ये तय किया है कि चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नाम अब शहीद भगत सिंह जी के नाम पर रखा जाएगा। पीएम मोदी ने कहा कि आने वाले 2 अक्टूबर को बापू की जयंती के मौके पर हमें रुटवबंसथ्वतस्वबंस अभियान को और तेज करने का संकल्प लेना है। खादी, हैंडलूम, हैंडीक्रॉफ्ट ये सारे प्रोडक्ट के साथ–साथ लोकल सामान जरूर खरीदें। इसके साथ ही पंडित दीन दयाल उपाध्याय की जयंती पर उन्हें याद करते हुए पीएम ने कहा कि 25 सितंबर को देश के प्रखर मानवतावादी, चिंतक और महान सपूत दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्मदिन मनाया जाता है। दीनदयाल जी का श्एकात्म मानवदर्शनश एक ऐसा विचार है, जो विचारधारा के नाम पर द्वन्द्व और दुराग्रह से मुक्ति दिलाता है।

अंकिता हत्याकांड: पिता बोले– हत्यारों को हो फांसी, सीएम धामी ने दोषियों को सजा दिलाने का लिया संकल्प

अंकिता को इंसाफ दिलाने के लिए अब लगातार कोशिशे की जा रही है। पब्लिक का गुस्सा इतना बढ़ गया है कि जब पुलिस की तरफ से लोगों को रोकने की कोशिश की गई तो उन्हें भी काफी मशक्त का सामना करना पड़ा। 19 वर्षीय अंकिता भंडारी की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट दिए जाने की मांग उसके परिवार वालों की तरफ से की जा रही है। इसके साथ ही पूरे मामले को फास्ट ट्रैक कोर्ट में सुनवाई की बात भी अंकिता के पिता की तरफ से कही गआ है। अंकिता के पिता ने आरोपियों के फांसी की मांग भी की है। अंकिता भंडारी के पिता ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री जी ने मुझसे कहा है कि हमने एसआईटी गठित कर दी है और केस की सुनवाई फास्ट ट्रैक कोर्ट में होगी। जब मेरी बेटी की फाइनल पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट मिलेगी तभी मैं उसका अंतिम संस्कार करूंगा। अंकिता के पिता ने पुलिस को 18 सितंबर को ही सूचित किए जाने की बात बताते हुए कहा कि उनकी बेटी के गायब होने के साथ ही इस बाबत सूचना स्थानीय पुलिस को दे दी गई थी। अंकिता के पिता ने कहा कि पुलिस ने अच्छा काम किया है। लेकिन पटवारी की गतली है। उसने अपने काम में लापरवाही की है। डीआईजी एवं अंकिता भंडारी हत्याकांड में गठित एसआईटी की प्रभारी पी. रेणुका देवी ने कहा कि हमने रिजॉर्ट में काम करने वाले सभी लोगों की सूची ली है और सब को पुलिस थाने में बुलाया है और उनसे कड़ी पूछताछ की जा रही है। हम रिजॉर्ट की भी जांच कर रहे कि कैसे लाइसेंस मिला और कैसे संचालित होता था। पीआर देवी ने एएनआई को बताया कि अंकिता के व्हाट्सएप चौट जो सामने आए हैं, उनकी भी जांच की जा रही है। अंकिता भंडारी हत्याकांड पर उत्तराखंड सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि सभी कार्रवाई तय समय से हो रही हैं। एसआईटी गठित हो गई है, उन्होंने अपनी जांच शुरु कर दी है। इसमें हर बिंदुओं पर जांच होगी। राज्य में इस तरह की घटना को स्वीकार नहीं किया जा सकता है। हमने दोषियों को सजा दिलाने का संकल्प लिया है।

INLD की फतेहाबाद रैली में बीजेपी पर भड़का विपक्ष, तेजस्वी बोले– अब कोई एनडीए नहीं

नीतीश ने की सभी दलों से की एकसाथ आने की अपील

नई दिल्ली। केंद्र की बीजेपी सरकार के खिलाफ इंडियन नेशनल लोकदल ने फतेहाबाद सम्मान दिवस रैली का आयोजन किया। इसमें 11 राज्यों के प्रमुख नेताओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। इन दौरान विपक्षी नेताओं के निशाने पर बीजेपी रही। तेजस्वी हो या नीतीश कुमार सभी के निशाने पर बीजेपी रही। चौधरी देवीलाल की 109वीं जयंती पर आयोजित रैली में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, महाराष्ट्र के पूर्व सीएम शरद पवार, सीताराम येचुरी और जेडीयू के महासचिव केसी त्यागी ने शिरकत की। राजद नेता तेजस्वी यादव ने इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) की रैली में कहा कि अब राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) नहीं है, शिवसेना, अकाली दल और जद (यू) जैसे भाजपा के सहयोगी दलों ने लोकतंत्र को बचाने के लिए इसका साथ छोड़ दिया है। पूर्व उप प्रधानमंत्री चौधरी देवी लाल के 109वें जन्मदिन पर आयोजित कार्यक्रम में बिहार के उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा कि आज देश की जो स्थिति बनी हुई है वो किसी से छुपी नहीं है। वो(भाजपा) लोग चाहते हैं कि इस देश का सब कुछ समाप्त हो जाए, केवल भाजपा, संघ और उनके कुछ साथी रह जाए। आज हम उन किसानों को धन्यवाद देते हैं जिनके बेटे जवान(फौजी) हैं क्योंकि जवानों ने देश को बचाने का काम किया है। मैं आप लोगों का धन्यवाद करने आया हूं कि किसानों ने किसान आंदोलन कर संघियों को अच्छे से सबक सिखाने का काम किया। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इनेलो की रैली में कहा कि हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कोई लड़ाई नहीं है, वह (भाजपा) अशांति पैदा करना चाहती है। मैं कांग्रेस समेत सभी दलों से एकसाथ आने की अपील करता हूं, तभी 2024 के लोकसभा चुनाव में वह (भाजपा) बुरी तरह हारेगी। पिछले चुनावों के दौरान, वे (भाजपा) हमारे उम्मीदवारों को हराने की कोशिश कर रहे थे। केंद्र ने पिछड़े राज्य के लिए जो वादा किया था, वह नहीं हुआ। बिहार में आज 7 पार्टियां एक साथ काम कर रही हैं। उनके पास 2024 जीतने का कोई मौका नहीं है।

शहीद भगत सिंह के नाम पर होगा चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नामकरण

भगवंत मान बोले: थैंक्यू मोदी जी

चंडीगढ़। चंडीगढ़ हवाई अड्डे का नाम 'शहीद–ए–आजम' भगत सिंह के नाम पर रखने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घोषणा का स्वागत करते हुए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने रविवार को कहा कि पंजाब के लोगों की लंबे समय से लंबित मांग पूरी हो गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो पर प्रसारित अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में कहा कि महान स्वतंत्रता सेनानी शहीद भगत सिंह को श्रद्धांजलि के तौर पर अब चंडीगढ़ हवाई अड्डे का नाम उनके नाम पर रखा जायेगा। मान ने ट्वीट कर कहा, ''अंततरू हमारी मांग पूरी हुयी। शहीद भगत सिंह के नाम पर चंडीगढ़ हवाई अड्डे का नाम रखने के निर्णय का पूरे पंजाब की तरफ से हम स्वागत करते हैं।'' प्रधानमंत्री को धन्यवाद देते हुये उन्होंने कहा, ''पंजाब के लोगों की लंबे समय से लंबित मांग अब पूरी हुयी है।'' हरियाणा के उप मुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला ने भी इस घोषणा का स्वागत किया है। चौटाला ने कहा कि पंजाब और हरियाणा की सरकारें इससे पहले चंडीगढ़ अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का नाम भगत सिंह के नाम पर रखने के लिये सहमत हुयी थीं। पिछले महीने इस मुद्दे पर भगवंत मान और दुष्यंत चौटाला की हुयी बैठक के बाद यह फैसला आया है। मान ने कहा, ''मैं खुश हूं कि हमारे प्रयास रंग लाए हैं और प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम में इस आशय की घोषणा की है।''

बांग्लादेश में बड़ा हादसा, महालया उत्सव मनाने मंदिर जा रहे थे यात्री, 24 की मौत, 30 लापता

बांग्लादेश के उत्तरी जिले पंचागढ़ में एक नाव के पलट जाने से कम से कम 24 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई। ढाका ट्रिब्यून के अनुसार, कम से कम 30 लोग अभी भी लापता हैं और मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। घटना की जानकारी रविवार दोपहर मारिया यूनियन के औलिया घाट से हुई पंचगढ़ के उपायुक्त जहीरुल इस्लाम ने पुष्टि की। ढाका से गोताखोरों का एक दल और शवों की तलाश के लिए नदी में छानबीन कर रहा था। ढीले सुरक्षा मानकों और ओवरलोडिंग के कारण बांग्लादेश में नाव दुर्घटनाएं आम हैं। चूंकि बांग्लादेश शक्तिशाली नदियों – गंगा और ब्रह्मपुत्र के निचले मार्ग पर स्थित है, देश 230 नदियों से घिरा हुआ है। पिछले साल दिसंबर में एक यात्री नौका के एक मालवाहक जहाज से टकराने और डूबने से लगभग 37 लोग डूब गए थे।

इंडियन मोबाइल कांग्रेस के मौके पर पीएम मोदी 5जी सेवाओं की करेंगे शुरुआत, एयरटेल और जीओ भी कर सकते हैं अपने प्लान की घोषणा

नई दिल्ली। केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने रविवार को एक कार्यक्रम में कहा कि भारत में 5ळ दूरसंचार सेवाएं बहुत जल्द शुरू की जाएंगी और सरकार का लक्ष्य 2 साल के भीतर पूरे देश को कवर करना होगा। मंत्री ने पहले कहा था कि भारत अक्टूबर तक 5जी सेवाएं शुरू करने की तैयारी कर रहा है। सरकार ने अगस्त के मध्य में दूरसंचार सेवा प्रदाताओं को स्पेक्ट्रम आवंटन पत्र जारी करते हुए उन्हें 5जी सेवाओं के रोलआउट के लिए तैयार करने के लिए कहा था। इस स्पेक्ट्रम आवंटन के साथ भारत हाई–स्पीड 5ळ दूरसंचार सेवाओं को शुरू करने के अंतिम चरण में है। अश्विनी वैष्णव ने कहा कि बहुत जल्द 5ळ सेवाएं शुरू जाएंगी और आने वाले दो सालों में पूरे देश में 5ळ सेवाएं देने का लक्ष्य है। इसमें सरकार करीब 35,000 करोड़ रुपए का निवेश करेगी। वैष्णव के अनुसार इंडियन मोबाइल कांग्रेस के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी 5जी सेवाओं की शुरुआत की घोषणा करेंगे। माना जा रहा है कि एयरटेल और जियो भी इस दौरान अपने प्लान की घोषणा कर सकते हैं। रिलायंस जियो ने पहले ही घोषणा कर दी है कि वह इस साल दिवाली तक दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई जैसे कई प्रमुख शहरों में हाई–स्पीड 5ळ टेलीकॉम सेवाएं लॉन्च करेगी। इसके बाद यह 2023 के दिसंबर तक देश भर के प्रत्येक शहर, तहसील और तालुका में अपने 5ळ नेटवर्क का विस्तार करने का इरादा रखता है, जो अब से लगभग 18 महीने बाद है। 5जी पांचवीं पीढ़ी का मोबाइल नेटवर्क है जो बहुत तेज गति से डेटा के बड़े सेट को प्रसारित करने में सक्षम है।

गुलाम नबी आजाद जम्मू पहुंचे, अगले हफ्ते कर सकते हैं अपनी पार्टी का ऐलान

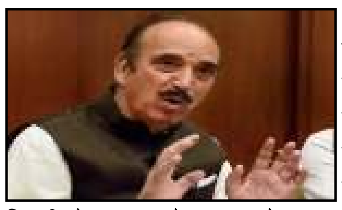

जम्मू। पिछले महीने कांग्रेस से अपना पांच दशक से अधिक पुराना नाता तोड़ने वाले वरिष्ठ नेता गुलाम नबी आजाद अगले कुछ दिनों में अपनी पार्टी के नाम का ऐलान कर सकते हैं। दिल्ली से जम्मू पहुंचे आजाद ने संवाददाताओं से कहा, '' मैं अपने दल की शुरुआत करने से पहले कल (सोमवार को) मीडिया को आमंत्रित करने जा रहा हूं। मैं यहां कार्यकर्ताओं और नेताओं से मिलने आया हूं।'' जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री आजाद के एक करीबी सूत्र ने जल्द ही नये दल की घोषणा की खबर की पुष्टि की है। आजाद के 27 सितंबर को श्रीनगर का दौरा करने की जानकारी साझा करते हुए सूत्र ने कहा, ''वह (आजाद) आज दिन में वरिष्ठ और दूसरी कतार के नेताओं के साथ मुलाकात करेंगे।'' उन्होंने कहा कि नयी पार्टी के नाम और झंडे को अंतिम रूप दे दिया गया है और जम्मू–कश्मीर के राजनीतिक परिदृश्य में एक या दो दिन में नया दल सामने आ जाएगा।

नए सीएम को लेकर कांग्रेस में तकरार तेज

मंत्री धारीवाल के घर गहलोत कैंप के 20 विधायकों की मीटिंग

जयपुर। राजस्थान में अशोक गहलोत की जगह किसी दूसरे नेता को चुनने के लिए आज शाम कांग्रेस विधायक दल की बैठक होगी। इसके लिए कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी ने सीनियर नेताओं को पर्यवेक्षक बनाकर भेजा है। इस बीच शहरी विकास मंत्री शांति धारीवाल के घर गहलोत कैंप के विधायकों की मीटिंग हो रही है, इसमें सिर्फ 20 विधायक ही पहुंचे हैं। ये लोग अपनी ताकत दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि विधायकों ने सीएलपी की बैठक में आने से मना कर दिया है। उन्होंने शहरी विकास मंत्री शांति धारीवाल के आवास पर बैठक की। धारीवाल के आवास पर गहलोत खेमे के विधायकों में पार्टी के उप सचेतक महेंद्र चौधरी, विधायक दानिश अबरार, महेश जोशी और गोविंद मेघवाल शामिल हैं। सूत्रों ने बताया कि अशोक गहलोत कांग्रेस के अध्यक्ष चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने से पहले राजस्थान के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे सकते हैं। कांग्रेस ने राजस्थान में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के जयपुर आवास पर रविवार शाम 7 बजे अपने विधायक दल की बैठक बुलाई, इस घोषणा के बाद नेतृत्व परिवर्तन की चर्चा के बीच कि वह पार्टी अध्यक्ष का चुनाव लड़ेंगे। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत का जैसलमेर एयरपोर्ट पहुंचने पर कैबिनेट मंत्री शाले मोहम्मद, विधायक रूपा राम, बाड़मेर विधायक मेवाराम जैन, कांग्रेस जिलाध्यक्ष उम्मेदसिंह तंवर, नगरपरिषद सभापति हरिवल्लभ कल्ला व कॉंग्रेसी कार्यकर्ताओं ने किया स्वागत। सूत्रों के मुताबिक, गहलोत सचिन पायलट के सीएम के रूप में विरोध कर रहे हैं और चाहते हैं कि विधायक अपनी बात कहें।

बच्चों से पुस्तकों को पढ़वाकर परखा शैक्षिक स्तर

डीएम ने प्राथमिक विद्यालय जगनपुर का किया आकस्मिक निरीक्षण

अयोध्या। जिलाधिकारी नितीश कुमार ने तहसील सोहावल क्षेत्रान्तर्गत स्थित प्राथमिक विद्यालय जगनपुर का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने अध्यापकों एवं बच्चों की उपस्थिति, विद्यालय परिसर में साफ–सफाई, भवनों की स्थिति व शिक्षा की गुणवत्ता स्तर का जायजा लिया तथा बच्चों के शैक्षिक स्तर को परखा। जिलाधिकारी ने कक्षा 5 के कक्ष में विभिन्न बच्चों से गणित के सवाल व हिन्दी की किताबें पढ़वाकर तथा कक्षा 1 व कक्षा 2 के बच्चों से अंग्रेजी वर्णमाला सुनी व हिन्दी की पुस्तकों को पढ़वाकर उनके शैक्षिक स्तर को परखा। इस दौरान कई बच्चों का शैक्षिक स्तर ठीक पाया गया उनके द्वारा गणित के सवालों को ठीक से हल किया गया। हिन्दी की पुस्तकों के पाठों को सही से पढ़ा व सही–सही अंग्रेजी वर्णमाला सुनाया। जिलाधिकारी ने शेष बच्चों को भी लेबल वाइज लर्निंग प्रदान करने व प्रेरणा के शैक्षिक स्तर के मानक के अनुरूप लाने हेतु शिक्षकों को निर्देशित किया। जिलाधिकारी ने शैक्षिक स्तर के अनुरूप सवालों को सही से हल करने वाले तथा किताबों व अंग्रेजी वर्णमाला को सही ढंग से पढ़ने व सुनाने वाले बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किया। इस दौरान विद्यालय परिसर में स्थित अतिरिक्त कक्ष को तकनीकी जांच कराकर उसे यथासम्भव मरम्मत कराकर अच्छे से रंगाई पोताई कराने के निर्देश दिये और विद्यालय परिसर को नियमित साफ रखने के निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान विद्यालय में पंजीकृत कुल 107 बच्चों में से 60 बच्चें उपस्थित पाये गये। जिलाधिकारी ने बच्चों की उपस्थिति में सुधार लाने के निर्देश दिये। उन्होंने शिक्षा मित्र रुक्मणि देवी को अपने बूथ लेबल आफिसर (बी0एल0ओ0) सम्बंधित दायित्वों का निर्वाहन विद्यालय के समय (प्रातः 8 बजे से अपरान्ह 2 बजे) के उपरांत ही करने के निर्देश दिये। उन्होंने बच्चों को नियमित रोस्टर के अनुरूप पोष्टिकता से भरपूर भोजन उपलब्ध कराने के निर्देश दिये तथा समस्त शिक्षकों को अपने–अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों का गम्भीरता से निर्वाहन करने तथा बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने के निर्देश दिये, जिससे बच्चें रूचि लेकर पढ़ाई करें।

विवाहिता ने ससुरालीजनों पर लगाया दहेज प्रताड़ना का आरोप

पति व ननद समेत तीन लोगों के खिलाफ केस दर्ज

गोसाईगंज–अयोध्या। गोसाईगंज कोतवाली इलाके की एक विवाहिता ने अपने ससुरालीजनों पर दहेज प्रताड़ना व मारपीट करने का आरोप लगाया है।मामले में कोतवाली पुलिस ने पीड़िता की शिकायत पर पति व ननद समेत तीन लोगों के खिलाफ सुसंगत धाराओं में केस दर्जकर विवेचना महिला एसआई वीना पांडे को सौंपी है।दिए गए शिकायती पत्र में कोतवाली इलाके के बदनपुर चोडारी की श्वेता पुत्री आज्ञाराम का कहना है कि उसकी शादी 12मई 2019 को पड़ोसी जनपद अम्बेडकरनगर के अहिरौली थाना इलाके के संग्रामपुर निवासी जैनेन्द्र पुत्र रामसागर के साथ हिन्दू रीति रिवाज से सम्पन्न हुई थी।शादी में उसके परिजनों ने अपनी हैसियत के मुताबिक सामान दिया था।आरोप है कि शादी में जब वह विदा होकर ससुराल आयी तो उसी दिन से उसके पति जैनेंद्र व ननद प्रीति ने कम दान दहेज के लिए मेरे माता पिता को मेरे सामने अपशब्द कहने लगे।जब उसने उसका विरोध किया तो उसे भी अपशब्द कहा गया।ननद व पति ने उसे मोटरसाइकिल, फ्रिज,कूलर के साथ तीन लाख रुपये की मांग करते हुए प्रताड़ित करने लगे।पांच दिन बाद विदा होकर अपने मायके आई और परिजनों को पूरी बात बताई तो परिजनों ने उसे समझाते हुए कहाकि समय के साथ सब ठीक हो जाएगा।दूसरी बार जब वह विदा होकर ससुराल आई तो उसके तन पर कपड़े को छोड़कर सारे जेवर,वस्त्र व सारा सामान रख लिया और मारपीट कर भगा दिया। 26अगस्त को शाम 5बजे उसके मायके आकर ननद,पति व अमित पुत्र ज्ञानसागर आये और तीन लाख की मांग करने लगे,मना करने पर उसे लात घूंसों से बुरी तरह से मारा पीटा और ना देने पर सम्बन्ध समाप्त करने की धमकी देते हुए चले गए। एसएचओ केके मिश्र के मुताबिक पीड़िता की शिकायत पर पति जैनेन्द्र,ननद प्रीति व अमित के खिलाफ केस दर्जकर मामले की पड़ताल कराई जा रही है।

किशोरी को अगवा करने वाला मुख्य आरोपी गिरफ्तार

गोसाईगंज–अयोध्या। कोतवाली इलाके में किशोरी को अगवा करने के मामले में कोतवाली पुलिस ने मुख्य आरोपी मो0 मेहताब निवासी गोसाईगंज तेलियागढ़ को गिरफ्तार कर लिया। एसएचओ के के मिश्र के मुताबिक आरोपी को महबूबगंज चौकी अंतर्गत ईशापुर मोड़ से गिरफ्तार किया गया। आरोपी के पास से लूट का एक सोने की चौन व 20230रुपये भी बरामद किया गया। आरोपी को चालान कर न्यायालय रवाना कर दिया गया। गौरतलब हो कि बीते गुरुवार को गोसाईगंज कस्बे के एक मुहल्ले की किशोरी को एक गैर सम्प्रदाय के युवक ने एक लाख रुपये व जेवरात के साथ अगवा कर लिया था। किशोरी के पिता ने जब युवक के परिजनों से शिकायत किया तो युवक के पिता व भाइयो ने मिलकर गाली गलौज करते हुए चाकू छुरी लेकर जान से मारने की धमकी देते हुए किशोरी के धर्मांतरण कराने की बात कही। पीड़ित पिता की शिकायत पर कोतवाली पुलिस ने मुख्य आरोपी मो0मेहताब,मो0 वाहिद,मो0आफताब,मो0आलम व मो0 आजम के खिलाफ केस दर्ज कर दो आरोपी मो0आफताब व पिता मो0वाहिद को गिरफ्तार कर लिया था। एसएचओ ने बताया कि अभी भी मामले में दो अन्य आरोपी मो0आजम व मो0 आलम फरार है,जिनकी तलाश में पुलिस टीम लगी हुई है।

दुर्गा पूजा पंडाल की सुरक्षा करेंगे वालंटियर

मूर्ति विसर्जन में 18 वर्ष से कम आयु के नहीं जाएंगे युवक : सीओ

मिल्कीपुर–अयोध्या । नवरात्र, दुर्गा पूजा और दशहरा को लेकर कुमारगंज थाने में उपजिलाधिकारी अमित कुमार जायसवाल और क्षेत्राधिकारी सत्येंद्र भूषण तिवारी मिल्कीपुर की अध्यक्षता में पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई। क्षेत्र के संभ्रात व्यक्तियों, मूर्ति स्थापित करने वाले लोगों और डीजे संचालकों और धर्मगुरुओं के साथ सीओ व एसडीएम ने शांतिपूर्ण तरीके से त्योहार मनाने की अपील की। एसडीएम ने बैठक में आए क्षेत्र के संभ्रांत लोगों से बिंदुवार चर्चा की। जिसमें दिनेश जायसवाल ने बताया कि जिस दिन मूर्ति विसर्जन होगी उस दिन कस्बा कुमारगंज में पीएनसी का कार्य बंद करवाया जाए, ताकि किसी प्रकार की कोई समस्या न हो। मूर्ति विसर्जन के दौरान सुरक्षा के लिए सिपाहियों की तैनाती भी की जाएगी। सीओ ने कहा कि हर त्योहार हमें आपसी प्रेम और भाईचारगी की सीख देते हैं। इसलिए त्योहार मिल–जुलकर मनाएं। क्षेत्राधिकारी ने बताया कि कोई नई परंपरा नहीं लागू की जाएगी, किसी भी प्रतिमा पर किसी भी व्यक्ति की फोटो नहीं होना चाहिए। सभी दुर्गा पूजा पंडाल व रामलीला की सुरक्षा वालंटियर करेंगे।

इसके साथ साथ आयोजन स्थल के करीबी बाथरूम की भी व्यवस्था आयोजकों द्वारा कराई जाए ताकि आने वाली किसी भी महिला को कोई परेशानी न उठानी पड़े। मूर्ति विसर्जन में 18 साल से कम उम्र के युवक नहीं जाएंगे। जो लोग जाएंगे उनकी सूची तैयार करने का निर्देश भी दिया है। यदि बताए गये नियमों के अनुसार कमेटी के सदस्य कार्य नहीं करेंगे तो उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। गांव में घटित होने वाली घटनाओं के संबंध में तत्काल पुलिस को सूचित करें। साथ ही त्योहार को सकुशल सम्पन्न कराने के लिए प्रेरित किया गया। थानाध्यक्ष विवेक कुमार सिंह ने कहा कि सभी धर्मों का सम्मान करना और आपस में मिलजुलकर रहना ही भारतीय संस्कृति है। इस संस्कृति को बचाकर रखना सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। इस मौके पर महेंद्र प्रताप सिंह, विकास सिंह छोटू, द्वारिका प्रसाद तिवारी, आनंद तिवारी, सत्यनारायण, लवलेश पांडे, विनय गुप्ता, कमल उपाध्याय समेत क्षेत्र के बड़ी संख्या में संभ्रांत लोग मौजूद रहे।

चाचा का चाल चलन अच्छा नहीं होने के कारण भतीजे ने की थी हत्या

कानपुर । बिल्हौर के रसूलपुर में बीती 22 सितंबर को भतीजे ने चाचा के गोली मार दी। गोली लगने से गंभीर रूप से युवक घायल हो गया था। इस पर पुलिस ने उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। वहीं, पुलिस ने आरोपित भतीजे को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही आरोपित के पास से वारदात में प्रयुक्त तमंचा भी बरामद किया है। एसपी आउटर तेज स्वरूप सिंह ने ....को घटना को खुलासा कर बताया कि घटना के बाद से आरोपित की तलाश के लिए तीन टीमों को गठन किया था। सूचना के आधार पर घटना के 48 घंटे के अंदर ही आरोपित प्रताप सिंह उर्फ गुड्डू को लालपुर क्रासिंग से ....सुबह गिरफ्तार कर लिया गया है। पूछताछ में आरोपित ने बताया कि चाचा का चरित्र अच्छा नहीं है, उनका चाल चलन अच्छा नहीं था। कई बार उन्हें अपने घर में आने के लिये मना किया, लेकिन वह कभी नहीं मानते थे। अक्सर घर में आ जाते थे। इससे आक्रोश में आकर मैंने उन्हें गोली मार दी। 15 अगस्त को जेल से रिहा हुआ था चाचाः चाचा ललौनी उर्फ सुनील सिंह भी आपराधिक प्रवृत्ति का है। कन्नौज के तिर्वा में बच्चे टिल्लू उर्फ चंद्रप्रकाश का अपहरण कर 8 अप्रैल 2000 में उसकी हत्या कर दी थी। इसके लिये 23 नवंबर 2009 को ललौनी उर्फ सुनील सिंह को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। बीती 15 अगस्त को ही वह जेल से रिहा होकर छूटा था।

छुट्टा जानवर किसानों की फसल कर रहे चौपट

–प्रदेश सरकार निर्देश का नहीं हो पा रहा असर

सोहावल–अयोध्या । प्रदेश सरकार के स्पष्ट निर्देश के बाद भी गांवों में व सड़कों पर घूम रहे आवारा पशुओं को स्थानीय गौशाला में भेज कर उनके चारे पानी की वयवस्था कराई जाय।मुख्यमंत्री के आदेश को सभी जिलों में लागू करते हुए सभी तहसीलों के राजस्व कर्मियों के साथ ग्राम पंचायत सचिव को इन आवारा और छुट्टा पशुओं को पकड़ कर गौशाला भेजने की जिम्मेदारी दी गई है। लेकिन पकड़ने के लिए लगाये गये जिम्मेदार अधिकारी और कर्मचारी शिकायत पर मन माफिक आख्या लगाकर सरकार को गुमराह करते हुये मामले का निस्तारण कर दे रहे हैं।जिसकी शिकायत जिला अधिकारी से लेकर मुख्यमंत्री दरबार तक की जा रही है, लेकिन इन पर कोई कार्यवाही तो दूर इनसे पूछताछ भी नहीं की जा रही है। सोहावल तहसील क्षेत्र में आवारा पशुओं की भरमार हो गयी हैसकिसान अपनी तैयार धान की फसल बचाने के लिये रात दिन अपने खेतों की रखवाली कर रहा हैसमौका मिलते ही दर्जनों की संख्या में आवारा पशुओं का झुंड खेतों में पहुंचकर किसानों की तैयार धान की फसल तहस–नहस कर देते हैं।इससे हटकर अगर देखा जाय तो ये आवारा पशु फसल नुकसान के साथ ही साथ आदमियों को भी अपना निशाना बना रहे हैं। जिले में अब तक सैकड़ो लोग इन जानवरों की चपेट में आ चुके हैंस जिनमें कई लोगों की मौत भी हो गई है।सोहावल के सुचित्तागंज बाजार में घूम रहा सांड कई लोगों को चोटहिल कर चुका हैस इसके लिए बाजार वासियों के साथ किसान यूनियन के कार्यकर्ताओं ने तहसील दिवस के साथ नगर पंचयात अधिकारों से शिकायत किया है स अभी तक किसी भी सक्षम अधिकारी की नजर इधर नहीं गयी है । ग्रामीण क्षेत्र के सुरवारी अर्थर, मीरपुर कांटा, मजनावां , आगेथुवा, खिरौनी, पंडितपुर , सोखावां , मोइया कपूरपुर ,कोला , गांव में आवारा पशुओं की भरमार हैस यह झुंड में जहाँ पहुचते है वहाँ कुछ ही समय में किसानों की गाढ़ी कमाई से तैयार फसल को नेस्तनाबूद कर देते हैं।इसके लिए मुख्यमंत्री हेल्पलाइन, और तहसील दिवस में शिकायत करने के बाद भ्रामक आख्या लगाकर विकास खण्ड के अधिकारी मामले का निस्तारण कर दे रहे हैं।स्थानीय निवासियों का कहना है कि अगर इन जानवरों की रोकथाम नहीं की गयी तो आने वाले दिनों में किसान को बेबस होकर खेती करना छोड़ देना पड़ेगा।

चोरी की दो बाइक के साथ दो अभियुक्त गिरफ्तार

रूदौली–अयोध्या।रूदौली कोतवाली पुलिस ने चौकिंग के दौरान दो अभियुक्तों को चोरी की दो मोटरसाइकिल के साथ नहर पुल कोठी के पास से गिरफ्तार कर लिया दोनो के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया है। जानकारी के अनुसार रूदौली कोतवाली पुलिस टीम ....को नहर पुल कोठी के पास एसएसपी प्रशांत कुमार वर्मा के निर्देश पर उपनिरीक्षक प्रशांत वर्मा अपने हमराही कांस्टेबल सन्तोष गुप्ता व राजेश यादव के साथ संदिग्ध व्यक्ति व वाहनों की चेकिंग की जा रही थी। चौकिंग के दौरान दो चोरो राकीयादव पुत्र भवानी प्रसाद यादव निवासी पूरे नरही मजरे नेवादा मवई व रुखसार अहमद पुत्र इरफान निवासी रसूलपुर नेवादा थाना मवई को गिरफ्तार कर लिया जिनके पास से दो मोटरसाइकिल एक स्प्लेंडर प्रो काले रंग की बिना नम्बर एंव एक स्प्लेंडर प्लस बरामद किया गया है। उपनिरीक्षक ने बताया कि दोनो अभियुक्तों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर जेल भेज दिया गया है।

संदिग्ध परिस्थितियों में बुजुर्ग की मौत

बीकापुर–अयोध्या। स्थानीय कोतवाली क्षेत्र के कटारी गांव में बुजुर्ग की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत की सूचना पर कोतवाली पुलिस समेत एसपीआरए मौके पर पहुंचकर जांच पड़ताल किया और कोतवाली पुलिस शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला चीर घर भिजवाया। बुजुर्ग की मौत को लेकर तरह–तरह की गांव में चर्चा है वही पुलिस का कहना है कि जब तक पीएम रिपोर्ट नहीं आ जाती तब तक कुछ कहना मुनासिब नहीं है। बीकापुर कोतवाली क्षेत्र के कटारी गांव निवासी जगदेव यादव उम्र 70 पुत्र स्वर्गीय राम नाथ की घर पर ही संदिग्ध परिस्थितियों में मौत होना बताया जा रहा है जबकि इस घटना को एक पक्ष के लोग हत्या का रुप देने में लगे हैं जबकि इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है। मृतक जगदेव सांस का मरीज था जो काफी दिन से बीमार चल रहा था। वहीं दूसरी तरफ जयप्रकाश पुत्र जगदेव और संदीप पुत्र सोहनलाल के बीच किसी बात को लेकर दोनों में मारपीट हो गई थी इसी दौरान जगदेव यादव घर पर मौत हो गई जिसकी सूचना कोतवाली पुलिस को दी गई मौके पर पहुंचे पुलिस टीम ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए चीरघर भेज दिया गया है। हत्या है या फिर कुछ और पीएम रिपोर्ट का लोगों को इंतजार है। जबकि गांव में चर्चा है कि जगदेव की मौत सांस की बीमारी के चलते हुई है इस बात की चर्चा जोरों पर है।

30 सितंबर को आएंगे डिप्टी सीएम,सीडीओ ने परखी तैयारियां

कानपुर देहात । विकासखंड संदलपुर की ग्राम पंचायत कोरौवा में 30 सितंबर को उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के प्रस्तावित दौरे को लेकर सीडीओ सौम्या पांडे ने विभागीय अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक करने के साथ ही गांव के विकास कार्यों का निरीक्षण किया। उन्होंने अफसरों को अधूरे काम शीघ्र पूरे करने के निर्देश दिए। गांव में निरीक्षण के दौरान सीडीओ ने मुख्य रूप से अमृत सरोवर फाउंटेन व चारों तरफ जाली लगाने के लिए कहा। अमृत वाटिका, ग्राम्य विकास एवं समग्र ग्राम विकास, ग्रामीण अभियंत्रण विभागों की समीक्षा की। इसमें कुछ जगह पर जलभराव भी देखा गया, उन्हें जल्द से जल्द जल निकलवाने के निर्देश दिए। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना, मुख्यमंत्री आवास योजना,अमृत सरोवर,जूनियर हाईस्कूल के संबंध में जानकारी ली। अधूरे कामों में पीडब्ल्यूडी सड़क,गलियों की मरम्मत,खेल मैदान व पंचायत भवन प्रस्तावित है जिसमें उन्होंने ग्राम पंचायत में सभी कार्यों को सतर्कता से लेते हुए जल्द से जल्द कार्य करने के निर्देश दिया। घरौनी वितरण के कार्य को भी राजस्व विभाग द्वारा शीघ्र पूर्ण करवा लिए जाए ताकि कार्यक्रम में घरौनी वितरण का कार्य भी सफलतापूर्वक हो सके।

पीएचडी के तृतीय चरण का साक्षात्कार 26 से 30 तक

अयोध्या। डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के पीएचडी प्रवेश परीक्षा में विभिन्न विषयों के क्वालिफाई छात्र छात्राओं के तृतीय चरण का साक्षात्कार 26 सितंबर से प्रारंभ होकर 30 सितंबर तक चलेगा।

अविवि के कुलपति प्रो0 अखिलेश कुमार सिंह के निर्देशक्रम में पीएचडी प्रवेश समन्वयक प्रो0 फारुक जमाल ने पीएचडी साक्षात्कार समय सारणी जारी की। विश्वविद्यालय में 26 सितंबर को प्रातः 10:00 बजे से विधि विषय के सभी अभ्यर्थियों का साक्षात्कार श्रीराम सिंह शलभ भवन में होगा। दूसरी ओर 27 सितंबर को सम्बद्ध महाविद्यालयों के शिक्षा विषय का साक्षात्कार लिया जायेगा। इसी दिन परिसर के प्रचेता भवन में शारीरिक शिक्षा विषय का साक्षात्कार होगा। 28 सितंबर को श्रीराम शलभ भवन में शिक्षा, जियोग्राफी व संबद्ध महाविद्यालयों के शारीरिक शिक्षा विषय का साक्षात्कार सेंट्रल इंस्ट्रुमेंटल सेंटर में होगा। 29 सितंबर को संबद्ध महाविद्यालयों के शिक्षा व जियोग्राफी विषय का साक्षात्कार शलभ भवन व परिसर के शिक्षा विषय का साक्षात्कार शिक्षा विभाग में संपन्न होगा। वही 30 सितंबर को श्रीराम शलभ भवन में जियोग्राफी व इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विषय का साक्षात्कार कराया जाएगा। पीएचडी 2021 के प्रवेश समन्वयक प्रो0 फारूक जमाल ने बताया कि पीएचडी प्रवेश परीक्षा के क्वालिफाई छात्र–छात्राओं के तृतीय चरण का साक्षात्कार 26 सितंबर से शुरू हो रहा है। इसके पूर्व विभिन्न विषयों के दो चरण का साक्षात्कार संपन्न हो चुका है। नेट, जेआरएफ व पार्ट टाइम पीएचडी के लिए प्रवेश परीक्षा में छात्र–छात्राओं को औपबंधित छूट प्रदान की गई थी। उन छात्रों को भी साक्षात्कार से गुजरना होगा। पीएचडी प्रवेश परीक्षा के अर्ह छात्र–छात्राओं की सूची विश्वविद्यालय की साइट पर अपलोड कर दी गई है।

6 स्थानों पर दोहरा लेकर जांच को भेजा

जौनपुर । सहायक आयुक्त (खाद्य) द्वितीय, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन ने अवगत कराया है कि जिलाधिकारी के आदेश के अनुपालन में जनपद में अपमिश्रित,असुरक्षित दोहरा,पान मसाला,स्वादिष्ट सुपारी,मावा,दोहरा के विनिर्माण,विक्रय, भण्डारण की रोकथाम के उद्देश्य से विशेष छापामार अभियान द्वारा जनपद जौनपुर में 23 से 25 सितम्बर तक कार्यवाही की जा रही है । खाद्य सचल दल द्वारा 24 सितम्बर को कृत कार्यवाही के दौरान जनपद के अलग–अलग स्थानों से दोहरा कुल–06 नियमानुसार जनहित में जांच हेतु संग्रहीत कर खाद्य विश्लेषक को प्रेषित किया गया ।

स्काउट अध्यापकों ने पैदल हाईक में किया प्रतिभाग

अयोध्या। स्काउट भवन में चल रहे सात दिवसीय स्काउट मास्टर गाइड कैप्टन शिविर के दौरान हाईक का आयोजन किया गया। स्काउट भवन के प्रांगण से कंपनी गार्डन तक खोज के चिन्हों की सहायता से विभिन्न विद्यालयों से आए स्काउट गाइड अध्यापकों ने स्काउट हाईक सम्पूर्ण की। इस संबंध में अधिक जानकारी देते हुए अयोध्या के सहायक लीडर ट्रेनर अनूप मल्होत्रा ने बताया की स्काउट और गाइड को आनंदात्मक प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए विद्यालयों के स्काउट गाइड अध्यापकों को विगत चार दिन से स्काउटिंग प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। जिसमे स्काउट इतिहास, प्रगतिशील प्रशिक्षण,प्राथमिक चिकित्सा, गांठ का प्रयोग, दिशाओं का ज्ञान, लीडरशिप, युवाओं की आवश्यकता आदि विषयों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के अंतर्गत ही खोज के चिन्हों के माध्यम से पैदल हाईक का आयोजन किया । जहां समाप्ति स्थल कंपनी गार्डन में बिना बर्तन के भोजन बनाकर

बूंदाबांदी के साथ धूप भी निकली, आफत की बारिश से जल्द मिलेगी निजात

कानपुर । कानपुर में ....को बारिश के साथ धूप भी निकली। हालांकि शहर के कुछ क्षेत्रों में बूंदाबांदी तो कहीं मध्यम बारिश भी हुई है। सीएसए यूनिवर्सिटी के मौसम विज्ञानी डॉ.एसएन सुनील पांडेय ने बताया कि डेवलप हुआ मौसमी सिस्टम ने अपना रुख बदल लिया है। दिल्ली और गोरखपुर, वाराणसी,मिर्जापुर सोनभद्र की तरफ बादल बरस सकते हैं। लेकिन कानपुर और कानपुर मंडल में भारी बारिश के आसार अब बिल्कुल नहीं दिख रहे हैं। मौसम विज्ञानी ने बताया कि शुष्क हवाएं न आने की वजह से अभी लोकल लेवल बारिश होती रहेगी। हवा में नमी की मात्रा 85 परसेंट से ज्यादा है ऐसे में धूप निकलते ही गर्मी पैदा होगी और लो क्लाउड फॉर्मेशन होंगे जो स्थानीय स्तर पर बारिश करेंगे। अलर्ट के बाद नहीं बरसे बादलः बता दें कि शुक्रवार को भारी बारिश को लेकर अलर्ट जारी किया गया था। स्कूलों की छुट्ध्टी भी कर दी गई थी लेकिन मौसमी सिस्टम आगे बढ़ने की वजह से मूसलाधार बारिश नहीं हुई। सुबह से शाम तक 2 मिमी. ही बारिश हो सकी। हालांकि शहर के ऊपर बादलों का डेरा बना रहा। वहीं शुक्रवार सुबह 8 बजे तक 16 मिमी. बारिश दर्ज की गई। पहाड़ों के साथ ही मैदानी इलाकों में भी बारिश का सिलसिला लगातार जारी है। ऐसे में गंगा के जलस्तर में भी लगातार बढ़ोत्तरी जारी है। गंगा बैराज पर बढ़ते जलस्तर को देखते हुए सभी 30 गेट खोल दिए गए हैं।

दिव्यांगजनों में वितरित किए गए कृत्रिम अंग

अयोध्या। समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण केन्द्र (सीआरसी) लखनऊ की ओर से प्रेस क्लब अयोध्या में दिव्यांगजनों के सहयोग के लिए कृत्रिम अंग प्रदान किए गए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सांसद अयोध्या लल्लू सिंह , विशिष्ट अतिथि अयोध्या विधायक वेद प्रकाश गुप्ता, विधायक बीकापुर अमित सिंह चौहान , विधायक रुदौली रामचन्द्र यादव , भाजपा जिलाध्यक्ष संजीव सिंह , महानगर अध्यक्ष अभिषेक मिश्र , जिला उपाध्यक्ष कृष्ण कुमार पाण्डेय खुन्नू मौजूद रहे। मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों ने शिविर में आए हुए दिव्यांगजनों को उपस्कर उपकरण दिए । जिनमें 22 ट्राईसाइकिल, 30 कान की मशीन, दो व्हील चेयर, 28 बैसाखी तथा अन्य सामान शामिल रहे। इस मौके पर विचार व्यक्त करते हुए मुख्य अतिथि लल्लू सिंह ने कहा गया कि भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित हो रहे विकासात्मक सप्ताह कार्यक्रमों के अन्तर्गत आज यह कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इस मौके पर बड़ी संख्या में भाजपा के पदाधिकारी व विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

सांसद जगदंबिका पाल के नेतृत्व में जनपद में प्रथम आगमन पर उपमुख्यमंत्री का हुआ भव्य स्वागत

ग्राम पंचायत समोगरा में लगा उप मुख्यमंत्री का ग्राम चौपाल

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। तहसील बांसी, विकास खण्ड मिठवल के अन्तर्गत ग्राम पंचायत समोगरा में उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने दीप प्रज्जवलन एवं पं0 दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण कर शुभारम्भ किया। चौपाल कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री भारत सरकार नरेन्द्र मोदी द्वारा किये जा रहे मन की बात कार्यक्रम को उपस्थित उपमुख्यमंत्री, जनप्रतिनिधिगण एवं लाभार्थियों द्वारा लाइव सुना गया। चौपाल कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री जी ने भारी संख्या में उपस्थित जन समूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के दूरदर्शी सोच और मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि आज जन कल्याणकारी योजनाओं का सीधा पात्र लाभार्थियों को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की सोच थी कि समाज के अंतिम व्यक्ति को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने से ही समाज और देश का वास्तवित विकास सम्भव है। आज प्रधानमंत्री के नेतृत्व में वर्तमान सरकार उसी सोच की अवधारणा पर गरीबों के उत्थान हेतु काम कर रही है, जिसका परिणाम भी देखने को मिल रहा है। उन्होंने ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान में भारत सरकार एवं उ0प्र0 सरकार द्वारा जनकल्याण के लिए विभिन्न योजनायें संचालित की गई है जिससे पात्र व्यक्ति लाभान्वित होकर अपने जीवन स्तर में निरन्तर सुधार के प्रति अग्रसर है। उन्होंने कहा कि सरकार की प्राथमिकता है कि प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचाया जाये। कोई भी व्यक्ति सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित न रहने पाये। चौपाल कार्यक्रम के दौरान सांसद डुमरियागंज जगदम्बिका पाल ने कहा कि पं0दीनदयाल उपाध्यक जी की जयन्ती है। उनका सपना था कि समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को लाभ मिले। ओ0डी0ओ0पी0 में चयनित काला नमक चावल की महक विदेशो तक फैल रही है। जनपद में सी0एफ0सी0 बन गयी है। जनपद सिद्धार्थनगर प्रदेश में सबसे अधिक मछली का उत्पादन कर रहा है। चौपाल के दौरान उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने 08 किसानो को नयी प्रजाति का बीज दिया । उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने चौपाल कार्यक्रम के दौरान बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग द्वारा आयोजित अन्नप्राशन एवं गोदभराई कार्यक्रम में महिलाओं की गोदभराई कर बच्चों को अन्नप्राशन कराते हुये पुष्टाहार वितरित किया गया। इस अवसर पर पूर्व विधायक डुमरियागंज राघवेन्द्र प्रताप सिंह, जिला विकास अधिकारी शेषमणि सिंह, पी0डी0, जिला पंचायत राज अधिकारी आदर्श, जिला कार्यक्रम अधिकारी शुभांगी कुलकर्णी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, उपायुक्त उद्योग दयाशंकर सरोज, जिला कृषि अधिकारी सी0पी0सिंह, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डा0 एम0पी0सिंह, एवं सम्बंधित अधिकारी एवं भारी संख्या में सम्मानित नगारिक आदि उपस्थित रहें।

जनपद के वरिष्ठ भाजपा नेता घनश्याम मिश्रा ने किया उप मुख्यमंत्री का स्वागत

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। रविवार को जनपद सिद्धार्थनगर में प्रथम बार निरीक्षण करने आए उत्तर प्रदेश सरकार के उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक का जिला भाजपा कार्यालय में चल रहे संगाठत्मक बैठक में जनपद के वरिष्ठ भाजपा नेता एवं भाजपा जिला उपाध्यक्ष घनश्याम मिश्रा ने अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर स्वागत व अभिनंदन किया। घनश्याम मिश्रा ने उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक से जनपद में उत्तर प्रदेश सरकार की नई योजनाएं को चालू करवाने की मांग की साथ ही भाजपा कार्यकर्ताओं को हो रही परेशानियों से भी अवगत कराया। उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक ने जिला उपाध्यक्ष घनश्याम मिश्रा के बातों को नोट करते हुए जल्द ही समाधान एवं योजनाओं को उपलब्ध करवाने का आश्वासन दिया।

जिला पंचायत सदस्य सब्लू साहनी ने उपमुख्यमंत्री का किया स्वागत

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। जिला पंचायत सदस्य सब्लू साहनी ने उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक को समीक्षा बैठक के दौरान स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत व अभिनंदन किया साथ ही जिला पंचायत सदस्यों को आ रही परेशानियों से अवगत कराया सब्लू साहनी ने मांग करते हुए कहा कि बर्डपुर और लोटन क्षेत्र में सड़कों की स्थिति बहुत खराब है उसे जल्दी ही ठीक कराएं साथ ही भाजपा कार्यकर्ताओं को किसी प्रकार की कोई परेशानी ना हो इसके लिए अधिकारियों को निर्देशित करें। उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक ने सबलू साहनी को आश्वासन देते हुए कहा कि भाजपा सरकार मे किसी भी जिला पंचायत सदस्य को परेशानी नहीं होगी हर कोई का अपना काम सही ढंग से करेगा। साथ ही अधिकारियों को निर्देशित किया जाएगा की भाजपा के किसी कार्यकर्ता को वह परेशान ना करें।

उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने छात्राओं के साथ चलाया कंप्यूटर

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। रविवार को निरीक्षण के दौरान उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक ने कस्तूरबा गांधी के छात्रों के साथ कंप्यूटर लैब में कंप्यूटर भी चलाया और बच्चों में बच्चों की तरह घुल मिलकर बातें करते हुए नजर आए आपको बता दें कि उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय, विकास खण्ड मिठवल का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पं0 दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण किया। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कम्प्यूटर लैब को देखा गया तथा छात्राओ से वार्ता की गयी। साथ ही समस्त कक्षाओ का निरीक्षण किया तथा छात्राओ से वार्ता करते हुए कहा कि आप लोग मन लगाकर पढ़ाई करे तथा अपने जनपद का नाम रोशन करे। लेकिन जनपद में आवासीय कस्तूरबा गांधी विद्यालयों के निर्माण में जो धाधली किया जा रहा है उस पर कोई भी वार्ता नहीं हुई यदि यह बात जिम्मेदारों द्वारा बताई गई होती तो शायद जनपद में बन रहे कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों के भाग खुल जाते।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के शौचालय को देखकर भड़के उपमुख्यमंत्री

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। रविवार को जनपद दौरे पर आए उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक समुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तिलौली के निरीक्षण के दौरान शौचालय की स्थिति को देखकर काफी भड़क गए साथ ही उन्होंने जिम्मेदारों को चेतावनी दी। आपको बता दें कि जब अधिकारियों को पहले से ही सूचना थी कि तिलौली सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री के द्वारा किया जाएगा उसके बाद भी शौचालय को दुरुस्त ना किया जाना अधिकारियों की मनमानी को दिखाता है रविवार को उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, तिलौली का निरीक्षण किया गया।निरीक्षण के दौरान पंजीकरण काउन्टर, एक्स–रे कक्ष, ओ0पी0डी0 पैथालॉजी कक्ष, शौचालय को देखा। शौचालय की खराब स्थिति को देखकर कड़ी नाराजगी व्यक्त की गयी। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र के जर्जर भवन के ध्वस्तीकरण हेतु प्रस्तव प्रेषित करने का निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान तीमारदारो से वार्ता की गयी। वार्ता के उपरान्त उपमुख्यमंत्री ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिया कि अस्पताल में आने वाले लोगो को किसी प्रकार की समस्या न हो।

उप मुख्यमंत्री के चौपाल के दौरान निकला सांप

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक के ग्राम चौपाल के दौरान ग्राम सभा समोगरा में सांप निकल जाने से अफरा–तफरी की स्थिति बन गई इसी अफरा–तफरी में सांप ने एक युवक को काट भी लिया लेकिन उसकी स्थिति अभी तक ठीक है सांप काटे गए युवक को मेडिकल टीम द्वारा तुरंत इलाज किया गया, जानकारों ने बताया कि शाम विषैला नहीं था इस कारण युवक की जान बच गई जिसमें साफ सफाई ना होने से जिम्मेदारों की पोल भी खुल गई।

सम्पादकीय

वैसी कोई स्वतंत्र व्यवस्था बनाए जाने की उम्मीद भारत में नहीं करनी चाहिए। अगर सुप्रीम कोर्ट पहल करके ऐसा कोई निकाय बनाए, जो नफरत फैलाने और मानवता विरोधी खबरों पर कार्रवाई करे और चौनलों पर भारी जुर्माना लगाए तब तो कुछ हो सकता है। अन्यथा सरकार क्यों इसे रोकेगी, जब उसको ...

नफरत की जड़ है वोट राजनीति

संदेह नहीं समस्या की जड़ है सरकार। और उसकी जड़ है सत्तारूढ़ दल की वोट राजनीति। उसी की वजह से नफरत मुख्य धारा का राजनीतिक विमर्श है। टीवी चौनल का नंबर बाद में आता हैं। वे सत्तारूढ़ दल के एजेंडे के प्रचार–प्रसार का महज माध्यम हैं। मिसाल के तौर पर भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा का एक ट्विट है। इसे उन्होंने भारत जोड़ो यात्रा में राहुल गांधी के साथ एक मुस्लिम बच्ची के चलने पर किया। राहुल की यात्रा में हर धर्म के लोग जुड़े हैं। उसी में एक मुस्लिम बच्ची उनके साथ थी, जिसका हाथ पकड़ कर वे चल रहे थे तो संबित पात्रा ने ट्विट किया कि तुष्टिकरण की राजनीति! सोचे, जब सत्तारूढ़ दल का राष्ट्रीय प्रवक्ता एक छह–आठ साल की बच्ची को लेकर इस तरह की नफरत वाली बात कहे तो क्या समझ नहीं आएगा कि राष्ट्र चरित्र में नफरत कितनी घुल गई है! बुद्धी का क्या हो गया है? भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता इस तरह की बात करते हैं और मीडिया उसे चलाता है। कई बार उन्हें इस तरह की चीजें चलाने को कहा जाता है और कई बार वे खुद की प्रतिबद्धता के चलते ऐसी खबरें चलाते हैं। यह बहुत दुखद है कि सरकार और सत्तारूढ़ दल के एजेंडे को अपना कर उसी में ढल गए है? न्यूज दिखाते और बहस करते–कराते बहुत सारे एंकर और पत्रकार उसी एजेंडे मे रंग गए हैं। वे किसी मजबूरी में या तटस्थ होकर ऐसी खबरें नहीं दिखा रहे हैं, बल्कि वे भी इसी तरह से सोचने लगे हैं। उनको लग रहा है कि वे राष्ट्र का या हिंदू समाज का, इनके नए चरित्र का निर्माण कर रहे हैं। इसलिए समस्या मीडिया की नहीं है, बल्कि सरकार और सत्तारूढ़ दल की है। वह वोट और चुनावी लाभ के लिए हिंदू–मुस्लिम की सदियों पुरानी ग्रंथि को भुना रहा है, उभार रहा है। उसे मुख्यधारा की मीडिया में बहस का मुद्दा बना दे रहा है। इसलिए जब सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि श्विजुअल मीडिया हेट स्पीच का मुख्य माध्यम हैय और श्सरकार मूकदर्शक बन कर नहीं रह सकती हैय तो यह पूरी तस्वीर नहीं है। सरकार ने ही विजुअल मीडिया को नफरत फैलाने का मुख्य माध्यम बनाया है। अगर उसके हाथ में इसे नियंत्रित करने की जिम्मेदारी दी जाती है तो समस्या कम होने की बजाय और बढ़ जाएगी। सुप्रीम कोर्ट ने ब्रिटेन की मिसाल दी, जहां नफरत फैलाने वाली खबर चलाने पर चौनल के ऊपर मोटा जुर्माना लगता है। वैसी कोई स्वतंत्र व्यवस्था बनाए जाने की उम्मीद भारत में नहीं करनी चाहिए। अगर सुप्रीम कोर्ट पहल करके ऐसा कोई निकाय बनाए, जो नफरत फैलाने और मानवता विरोधी खबरों पर कार्रवाई करे और चौनलों पर भारी जुर्माना लगाए तब तो कुछ हो सकता है। अन्यथा सरकार क्यों इसे रोकेगी, जब उसको इसका राजनीतिक लाभ मिलता है? खुद सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा है चौनल हेट स्पीच को बढ़ावा देते हैं और पार्टियां उसका इस्तेमाल करती हैं। लेकिन सभी पार्टियां इस्तेमाल नहीं करती हैं। हेट स्पीच की लाभार्थी पार्टियां एक–दो ही हैं और वे कौन हैं, यह जगजाहिर है।

मेरी मां

मुझे लगता था तु झुठ तु फरेब है,
तेरे मे शक्ति नही तु बड़ी शक्तिहीन है।
पसारा था पाऊँ अपना पापों मे,
सना था हाथ मेरा दुर्गुड़ों के नाले मे।
तु आती थी चली जाती थी कदर नही थी तेरी,
जरा सा कस्ट क्या दिया आँखें खुल गयी मेरी।
तु प्रेम अगाध करती है वो मेरी माँ,
मैं समझा इस शृष्टि की रचना तेरे हाथों हैं माँ ।
तु बड़ी दयालु है वो मेरी माँ,
हमें बना लो अपने चरणों की धूल वो मेरी माँ ।
एक छोटी सी अर्जी है माँ,
बन कर फुल तेरे चरणों मे सज जाऊँ वो माँ ।
अम्मा–पापा के चरणों में पला मैं,
उनके कर्ज से नही पर सेवा से तर जाऊँ वो माँ ।

नवरतन तिवारी (युवा कवि)/
दैनिक बुद्ध का संदेश
बेलानापर

नफरत रोकने की कोशिश

मीडिया के जरिए पूंजी बढ़ाने का चक्र सत्ता की धुरी के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए इस खेल में सब एक–दूसरे के साथी हैं। अगर सत्ता के लिए नफरत का माहौल मुनासिब है, तो फिर मीडिया घराने इस माहौल को ही बनाने का काम करेंगे। इस काम में कभी–कभी नफरत का अतिरेक भी दिख जाता है, तो सवाल उठते हैं कि अब पत्रकारिता के मूल्य कहां खो गए हैं। लेकिन नफरत कम हो या अधिक...

देश में नफरत फैलाने की सतत कोशिशों के कारण जो दरार समाज में दिखने लगी है, उसे भरने के लिए और भारत को नए सिरे से एकता के सूत्र में बांधने का इरादा लेकर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी इस वक्त भारत जोड़ो यात्रा निकाल रहे हैं। फिलहाल यात्रा केरल में है और इसे जिस तरह का जनसमर्थन मिल रहा है, उससे पता चलता है कि देश के युवा, बूढ़े, बच्चे सभी भारत को मजबूती से जोड़ने के विचार से उत्साहित हैं।

मुख्यधारा के मीडिया में इस यात्रा के बारे में जानकारियां तो दी जा रही हैं, लेकिन उसके साथ कांग्रेस के भीतर चल रही खटपट, या कांग्रेस कहां कमजोर पड़ रही है, ऐसी खबरें अधिक प्रमुखता से दिखाई जा रही हैं। भारत जोड़ो यात्रा में भले रोजाना हजारों लोग स्वतरूस्फूर्त तरीके से जुड़ रहे हों, लेकिन बड़े–बड़े समाचार प्रस्तोताओं यानी एंकर्स के लिए उनके बारे में बात करना जरूरी न समझ कर चीतों की बात करना उचित समझ रहे हैं। यहां पसंद अपनी–अपनी, ख्याल अपना–अपना वाला सिद्धांत लागू नहीं होता है, बल्कि सवाल प्राथमिकता का है। अगर भाजपा के छोटे से छोटे अभियान को दिन–रात को दिखाया जा सकता है, तो फिर कांग्रेस के नेतृत्व में निकल रहे एक जरूरी अभियान को उपेक्षित क्यों किया जा रहा है।

जाहिर है मुख्यधारा के मीडिया का एजेंडा यह है कि किसी भी तरह कांग्रेस को भाजपा के मुकाबले कमतर साबित करके बताया जाए। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रभारी पवन खेड़ा ने इस यात्रा के बारे में देशबन्धु से चर्चा के दौरान पहली टिप्पणी यही की कि टीवी पर जो भारत दिखाया जाता है और जिस तरह के मुद्दों पर बहसें की जाती हैं, वह असली भारत नहीं है, ये 15 दिन की यात्रा में समझ आ गया है। श्री खेड़ा के इस बयान से पता चलता है कि देश की असलियत से चौनलों के जरिए परिचित नहीं हुआ जा सकता, क्योंकि वहां सब कुछ प्रायोजित है, ब्रेकिंग न्यूज से लेकर परिचर्चाओं तक।

खबरों के इस प्रायोजित चलन से पत्रकारिता का नुकसान तो हुआ ही है, देश के ताने–बाने को भी गहरी चोट मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने हालिया टिप्पणी में पूछा भी है कि हमारा देश किस ओर जा रहा है। गौरतलब है कि न्यायमूर्ति केएम जोसेफ और न्यायमूर्ति हृषिकेश रॉय की पीठ बुधवार को 11 रिट याचिकाओं के एक बैच की सुनवाई कर रही थी, जिसमें हेट स्पीच को नियंत्रित करने के निर्देश देने की मांग की गई है। बैच में सुदर्शन न्यूज टीवी द्वारा प्रसारित श्यूपीएससी जिहादश शो के खिलाफ दायर याचिकाएं, धर्म संसद की बैठकों में दिए गए भाषण, और सोशल मीडिया संदेशों के नियमन की मांग करने वाली याचिकाएं हैं, जो कोविड महामारी को सांप्रदायिक बना रहे थे। इसी दौरान देश की शीर्ष अदालत ने मौखिक सवाल किया कि हमारा देश किस ओर जा रहा है। अदालत ने भारत सरकार से भी सवाल किया है कि श्जब यह सब हो रहा है तो यह एक मूक गवाह के रूप में क्यों खड़ी है। जस्टिस जोसेफ ने सुझाव दिया कि सरकार को एक ऐसी संस्था बनाने के लिए आगे आना चाहिए जिसका पालन सभी करेंगे। इसके अलावा उन्होंने एंकर की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि जैसे ही आप किसी को हेट स्पीच में जाते हुए देखते हैं, यह एंकर का कर्तव्य है कि वह तुरंत देखें कि वह उस व्यक्ति को आगे कुछ भी कहने के लिए अनुमति ना दे। सुप्रीम कोर्ट की ओर से नफरती बातों के प्रसार को रोकने के लिए की गई इस पहल से एक दिन पहले ही केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने एशिया–पैसिफिक इंस्टिट्यूट फॉर ब्रॉडकास्टिंग डेवलपमेंट द्वारा आयोजित एआईबीडी जनरल कॉन्फ्रेंस 2022 में कहा था कि मुख्यधारा की मीडिया को सबसे ज्यादा खतरा ऑनलाइन मीडिया से नहीं बल्कि खुद न्यूज चौनलों से है। उन्होंने टीवी चौनलों के लिए कहा था कि यदि आप ऐसे मेहमानों को चौनलों पर आमंत्रित करेंगे जो ध्रुवीकरण कर रहे हैं, जो झूठी खबरें फैलाते हैं, और जो जोर–जोर से चिल्लाते हैं, तो इससे आपके चौनल की विश्वसनीयता कम हो जाती है। अदालत के निर्देश और केन्द्रीय मंत्री की चिंताओं को देखकर उम्मीद बंधती है कि पत्रकारिता के पेशे पर जो कालिख पिछले सात–आठ सालों में गहराई है, वह थोड़ी कम हो सकती है। लेकिन हकीकत ये भी है कि मीडिया के लिए सरोकारों को व्यक्त करने में काफी देरी हो गई है। जैसे छोटे से घाव को नजरंदाज किया जाए, तो वह नासूर बन जाता है, इस वक्त मुख्यधारा के मीडिया का बड़ा वर्ग समाज के लिए ऐसा ही नासूर बन गया है। मंत्री महोदय की चिंता है कि चौनल ध्रुवीकरण करने वाले मेहमानों को बुलाएंगे तो उनकी विश्वसनीयता कम होगी और अदालत की चिंता है कि एंकर हेट स्पीच करने वालों को रोकने के लिए तत्पर क्यों नहीं हैं। लेकिन इन दोनों चिंताओं की असली जड़ जहां है, वहां तक क्या सरकार और अदालत की टिप्पणियां पहुंच पाएंगी। मीडिया मिशन नहीं मुनाफे वाले कारोबार की तरह चलाया जाता है, जिसमें बड़े पैमाने पर कार्पोरेट पूंजी लगी होती है। देश के अधिकतर मीडिया घराने कार्पोरेट के नियंत्रण में हैं और जो नहीं हैं, पूंजी छल–बल से उन पर मालिकाना कब्जे की कोशिश कर रही है। मीडिया के जरिए पूंजी बढ़ाने का चक्र सत्ता की धुरी के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। इसलिए इस खेल में सब एक–दूसरे के साथी हैं। अगर सत्ता के लिए नफरत का माहौल मुनासिब है, तो फिर मीडिया घराने इस माहौल को ही बनाने का काम करेंगे। इस काम में कभी–कभी नफरत का अतिरेक भी दिख जाता है, तो सवाल उठते हैं कि अब पत्रकारिता के मूल्य कहां खो गए हैं। लेकिन नफरत कम हो या अधिक, टीवी पर चिल्ला कर फैलाई जाए, या दबी जुबान से झूठ बोलकर या फिर सोशल मीडिया की ट्रोल सेना के जरिए फैलाई जाए, नफरत हर सूरत में समाज के लिए खतरनाक ही होती है।

विपक्षी राज्यों में राज्यपालों की भूमिका

उधर तमिलनाडु में राज्यपाल आरएन रवि के साथ भी इसी तरह का टकराव चल रहा है। उन्होंने विधानसभा से पास एंटी नीट बिल को रोक दिया। इसके बाद मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने तमिल न्यू ईयर के मौके पर राज्यपाल की ओर से आयोजित एट होम कार्यक्रम का बहिष्कार किया। मुख्यमंत्री को राज्यपाल से अपील करनी पड़ी कि वे विधानसभा से पास 21 विधेयकों को मंजूरी दें। राज्य की पार्टियों का...

अजीत द्विवेदी

इससे पहले शायद ही कभी विपक्ष शासित राज्यों में सरकार और राज्यपाल का ऐसा टकराव देखने को मिला होगा, जैसा अभी देखने को मिल रहा है। गैर भाजपा दलों के शासन वाले लगभग सभी राज्यों में टकराव चल रहा है। संवैधानिक मामलों से लेकर सामान्य प्रशासन से जुड़े मुद्दों पर भी राज्यपाल और राज्य सरकारें आमने–सामने हैं। दक्षिण में केरल और तमिलनाडु से लेकर पूर्व में झारखंड और उत्तर में पंजाब तक यह टकराव देखने को मिल रहा है। राजधानी दिल्ली में भी राज्य सरकार और उप राज्यपाल का लगभग रोज का ही झगड़ा है। महाराष्ट्र में सरकार बदल जाने की वजह से विवाद शांत हुआ है और पश्चिम बंगाल के राज्यपाल के देश का उप राष्ट्रपति बन जाने से बाद से कोलकाता में भी शांति है। राज्यों में चल रहे इस तरह के टकराव से राज्यपाल के संवैधानिक पद की गरिमा पर बड़ा सवाल उठ रहा है।

ताजा मामला पंजाब के राज्यपाल का है। राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने विधानसभा का विशेष सत्र बुलाने के राज्य सरकार के प्रस्ताव को खारिज कर दिया है। हालांकि राज्यपाल ने पहले इसकी मंजूरी दी थी लेकिन बाद में उन्होंने इस मंजूरी को रद्द कर दिया। नियम के मुताबिक कोई भी राज्य सरकार अगर विधानसभा का विशेष सत्र बुलाती है तो उसे इसका एक कारण देना होता है। सो, राज्य सरकार ने बहुमत साबित करने का कारण दिया था। इसके बावजूद दी गई मंजूरी रद्द कर दी गई। अब राज्य सरकार इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देने की तैयारी कर रही है और उसने दो दिन का नियमित सत्र बुलाने का फैसला किया है। आम आदमी पार्टी की सरकार उस नियमित सत्र में बहुमत साबित करेगी। हालांकि बहुमत साबित करना एक ड्रामा है, जिसकी कोई जरूरत नहीं है। राज्य की 117 सदस्यों की विधानसभा में आप के 92 विधायक हैं और सब उसके साथ हैं। फिर भी भाजपा के ऊपर ऑपरेशन लोटस का आरोप लगाने और उस पर भाषण देने के लिए सत्र बुलाया जाना है। यह ड्रामा है इसके बावजूद राज्यपाल की बाध्यता है कि वे राज्य सरकार की ओर से भेजे गए प्रस्ताव को स्वीकार करें।

राजभवन की राजनीति का एक दिलचस्प मामला झारखंड का है, जहां मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की विधानसभा सदस्य के तौर पर अयोग्यता को लेकर चुनाव आयोग की ओर से भेजी गई रिपोर्ट लंबित है। राज्य में एक खदान का पट्टा अपने नाम कराने के मामले में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की शिकायत राज्यपाल से की गई थी, जिसे राज्यपाल ने चुनाव आयोग को भेजा था। आयोग ने मई से लेकर अगस्त तक लंबी सुनवाई के बाद फैसला किया और अपनी रिपोर्ट पिछले 25 अगस्त को राज्यपाल को भेज दी। इसी तरह की शिकायत मुख्यमंत्री के भाई और जेएमएम के विधायक बसंत सोरेन के खिलाफ भी हुई थी और उसकी भी रिपोर्ट आयोग ने राज्यपाल को भेज दी है। चुनाव आयोग को रिपोर्ट भेजे एक महीना होने को है और राज्यपाल ने उस रिपोर्ट को सार्वजनिक नहीं किया है और कोई फैसला भी नहीं किया है। इस तरह राज्य में असमंजस की स्थिति बनी हुई। राज्य में सरकार चला रहे गठबंधन के नेता राज्यपाल से मिले थे और उनसे जल्दी फैसला करने को कहा था तो राज्यपाल ने उन्हें भरोसा दिलाया था कि वे एक–दो दिन में फैसला करेंगे लेकिन उसके भी तीन हफ्ते से ज्यादा हो गए। खुद मुख्यमंत्री ने भी राज्यपाल से मिल कर जल्दी फैसला करने को कहा पर राज्यपाल फैसला नहीं कर रहे हैं।

यह सही है कि राज्यपाल के लिए समय सीमा की बाध्यता नहीं है लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि इस तरह के संवेदनशील मामले में राज्यपाल फैसला अनंतकाल तक रोक कर रखें। उनके फैसला नहीं करने की वजह से राज्य में राजनीतिक अस्थिरता का माहौल है। भाजपा की ओर से प्रचार किया जा रहा है कि मुख्यमंत्री की सदस्यता जाएगी और उनके चुनाव लडने पर रोक लगेगी। इस प्रचार के जरिए सरकार को अस्थिर करने का प्रयास किया जा रहा है। संविधान के मुताबिक राज्य सरकार की ओर से भेजे गए प्रस्ताव को मानने के लिए राज्यपाल बाध्य होता है लेकिन संवैधानिक प्रावधान का लूप होल है कि राज्यपाल के लिए उसे स्वीकार करने की समय सीमा नहीं तय की गई है। इसी का फायदा उठा कर महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने उद्धव ठाकरे सरकार की ओर से विधान परिषद में मनोनयन के लिए भेजी गई 12 नामों की सूची डेढ़ साल तक लटकाए रखी। भाजपा समर्थित नई सरकार ने अब वो सारे नाम वापस ले लिए हैं और नई सरकार नए नाम भेजेगी। हैरानी नहीं होगी अगर राज्यपाल उन नामों को 24 घंटे के अंदर मंजूरी दे दें। बहरहाल, दिल्ली में उप राज्यपाल को ही केंद्र सरकार ने असली सरकार की मान्यता दे दी है। इसे संसद से मंजूर करा कर कानून बना दिया गया है। अब राज्य की चुनी हुई सरकार और विधानसभा का कोई खास मतलब नहीं रह गया है। इसके बावजूद उप राज्यपाल और राज्य सरकार के बीच आए दिन किसी न किसी मसले पर टकराव होता है। ये सारे टकराव विशुद्ध रूप से राजनीतिक हैं। उप राज्यपाल ने नई शराब नीति की सीबीआई जांच के आदेश दिए, जिसके बाद 19 अगस्त सीबीआई ने उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया के यहां छाप मारा। उसके एक महीने बाद तक न सिसोदिया को पूछताछ के लिए बुलाया गया है और न उनकी गिरफ्तारी हुई है। इस बीच उप राज्यपाल ने बस खरीद में कथित घोटाले की सीबीआई जांच के लिए लिख दिया है। हालांकि बस खरीदे नहीं गए हैं, सिर्फ टेंडर निकाले गए थे। इसके जवाब में आम आदमी पार्टी ने उप राज्यपाल के ऊपर नोटबंदी के समय 14 सौ करोड़ रुपए का घोटाला करने का आरोप लगाया है। अभी सबसे बड़ा विवाद केरल में चल रहा है, जहां कम्युनिस्ट पार्टी की राज्य सरकार और राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के बीच कई मामलों पर विवाद है। आरिफ मोहम्मद खान तीन साल पहले केरल के राज्यपाल बने थे और राज्य की वाम मोर्चा सरकार के साथ उनका विवाद तभी से चल रहा है। नीतिगत मसलों से लेकर निजी स्टाफ तक के मसले पर विवाद हो रहा है। राज्य सरकार ने भाजपा के एक नेता को राज्यपाल का एपीएस बनाए जाने का विरोध किया तो राज्यपाल ने मंत्रियों के निजी कर्मचारियों को पेंशन देने की नीति पर सवाल उठाए। राज्य सरकार की ओर से मंजूर किए गए अध्यादेशों को राजभवन ने लंबित कर दिया, जिसकी वजह से 11 अध्यादेश समाप्त हो गए। तो दूसरी ओर राज्य सरकार ने विश्वविद्यालयों में कुलपतियों की नियुक्ति में राज्यपाल के अधिकार कम करने का कानून बना दिया। राज्यपाल ने नागरिकता संशोधन कानून यानी सीएए का समर्थन किया था, जिसे लेकर उनका आरोप है कि हिस्ट्री कांग्रेस में उनको भाषण देने से रोका गया। इस मामले में पहले उन्होंने इरफान हबीब का नाम लिया था और अब कहा है कि सीपीएम नेता केके रागेश इस घटना के पीछे थे, जो अभी मुख्यमंत्री पी विजयन के निजी सचिव हैं।

श्रमजीवी पत्रकार संघ की मिश्रिख तहसील इकाई का हुआ गठन

सुनीत पाण्डेय बने अध्यक्ष, रोहित त्रिपाठी, आलोक वर्मा, पुरूषोत्तम शर्मा बने उपाध्यक्ष

सीतापुर। नैमिष तीर्थ अंतर्गत होटल कृष्ण स्पर्श में श्रमजीवी पत्रकार संघ के बैनर तले एक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्य अतिथि मान्यता प्राप्त संवाददाता समिति लखनऊ के महामंत्री शिवशरण सिंह ने स्थानीय पत्रकारों को संबोधित करते हुए आज के समय मे पत्रकारों की एकजुटता पर जोर दिया। साथ ही निडरता से आमजन के हित से जुड़े मुद्दों को उठाने की जरूरत बताई। इस दौरान मान्यता प्राप्त राज्यसंवाददाता अजय सिंह ने आज के दौर में पत्रकारों के समक्ष आ रही चुनौतियों का जिक्र करते हुए संघे शक्ति कलियुगे की परिपाटी का अनुसरण करते हुए एकजुटता के साथ पत्रकार हितों के लिए कार्य करने की जरूरत बताई। इस दौरान श्रमजीवी पत्रकार संगठन के प्रदेश स्तरीय पदाधिकारियों के निर्देश पर सभी स्थानीय पत्रकारों की सर्वसम्मति से मिश्रिख तहसील इकाई का गठन किया गया, जिसमें पत्रकार सुनील पांडेय को सर्वसम्मति से तहसील अध्यक्ष चुना गया। वहीं रोहित त्रिपाठी (देवदत्त), आलोक वर्मा, पुरुषोत्तम शर्मा को उपाध्यक्ष, सुधीर गांधी को महामंत्री, इस्माइल बेग को मंत्री, रेहानुल हक को कोषाध्यक्ष, विवेक दीक्षित, राजेंद्र अवस्थी को सचिव और कुलदीप शुक्ला को मीडिया प्रभारी का दायित्व सौंपा गया। कार्यकारिणी गठन की प्रक्रिया के बाद नवनियुक्त तहसील अध्यक्ष सुनीत पांडेय, रोहित त्रिपाठी, आलोक वर्मा, पुरुषोत्तम शर्मा ने सभी पत्रकार साथियों से मिले प्रेम और स्नेह के प्रति आभार प्रकट करते हुए सभी की उम्मीदों पर खरा उतरने की प्रतिबद्धता प्रकट की साथ ही पत्रकार हितों के लिए हमेशा उपलब्ध होने की बात कही। बैठक में बड़ी संख्या में मिश्रिख तहसील अंतर्गत मिश्रिख, नैमिषारण्य, कल्ली चौराहा, संदना, गोंदलामऊ के पत्रकार साथी मौजूद रहे।

युवक मंगल दल के द्वारा गोष्ठी का आयोजन कर युवाओं को दिलाई गई नशमुक्ति की शपथ

दैनिक बुद्ध का संदेश
करमा,सोनभद्र। उत्तर प्रदेश मंगल दल के कार्यकर्ताओ द्वारा रविवार को करमा ब्लाक के पंचायत भवन पर करमा थाना प्रभारी राजेश कुमार सिंह की

सरकार के युवा कल्याण विभाग द्वारा संचालित संगठन युवक महुअरिया ग्राम पंचायत के राजस्व गाँव करकोली स्थित उपस्थिति मे गोष्ठी का आयोजन कर युवाओं को नशामुक्ति की शपथ दिलाई गई। श्री सिंह ने बताया की हमारे मुखिया पुलिस अधीक्षक यशवीर सिंह द्वारा लगातार नशे के सौदागरो के खिलाफ अभियान चलाकर कार्यवाही की जा रही है। ऐसे मे हम लोगो की भी ये जिम्मेदारी बनती हैं।

की आने वाली युवा पीढ़ी को नशे के चपेट मे आने से पूर्व ही ऐसे गिरोह का आपरेशन कर दिया जाय जिससे आने वाली पीढ़ी के हाथ मे नशे की समग्री न होकर शिक्षा से जुड़ी समग्री उपलब्ध हो।

पिछले वर्ष देशभर का आकड़ा देखा जाय तो नशे के लत से दस हजार पाँच सौ इकसठ मामले सुसाइड नोट के दर्ज है। ऐसे मे व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाकर जागरूक करना होगा। वही युवक मंगल दल के कार्यवाहक जिलाध्यक्ष मनोज कुमार दीक्षित ने बताया की नशा न सिर्फ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है। अपितु नशे से आर्थिक नुकसान के साथ साथ सामाजिक नुकसान भी होता हैं। जनपद के लोकप्रिय पुलिस अधीक्षक श्री यशवीर सिंह द्वारा टीम बनाकर ऐसे अराजक तत्वों पर नजर रखी जा रही है। और ताबड़तोड़ कार्यवाही भी की जा रही है। वर्तमान में चौदह वर्ष से ही बच्चे नशे के चपेट मे आ जा रहे है। जिससे परिवार को काफी समस्याओ का सामना करना पड़ जा रहा है। जबकि नशा सामग्री बनाने वाली एजेंसिया सफ तौर पर लिखकर खाली हो रही है की नशा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। फिर भी नजरअंदाज किया जा रहा है। जनपद सोनभद्र आदिवासी व पिछड़ा जनपद होने के नाते समय समय पर जागरूकता अभियान चलाकर जागरूक किया जाना बेहद जरूरी हैं। जिससे की आने वाली युवा पीढ़ी नशमुक्त हो सके वही युवक मंगल दल के करमा ब्लाक अध्यक्ष शक्ति सिंह व ब्लाक सचिव जीतेन्द्र मौर्या बताया की इसी प्रकार से युवक मंगल दल के कार्यकर्ताओ द्वारा जनपद सोनभद्र के दसो ब्लाक मे नशमुक्ति अभियान की शपथ, रैली, व नुक्कड़ नाटक निकालकर जनपद के लोगो को नशे के दुष्परिणाम के बारे में बताकर जागरूक किया जाएगा। इस मौके पर गौतम सिंह, विकास सिंह, अरविन्द कुमार, अतुल कुमार, अनिल सिंह, चंद्रबली,रवि, आशीष, समेत पच्चासो कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

सनदान देवी मंदिर के नाम पर पड़ा संदना क्षेत्र का नाम

मंदिर तक जाने वाला मार्ग जर्जर, भक्तों को करना पड़ता है समस्याओं का सामना

सीतापुर। धार्मिक नगरी नैमिषारण्य से 18 किलोमीटर दूरी पर स्थित संदना गांव में आस्था ही नही लोगो के देशभक्ति भी सिर चढ़कर बोलती है। यहाँ स्थित परमहंस सुन्दरानंन्द आश्रम आस्था का केन्द्र है। जिसकी अपने आप में एक अलग ही पहचान है। दूर दराज से आये भक्तों की मन्नतें पूरी होती है। लोगो का मानना है कि यहाँ पर स्थित सनदान देवी माँ के मंदिर में एक बार चोर चोरी करने आये थे। चोर चोरी कर के जा रहे थे कि उनके पैरों में बेड़िया पड़ गयी। सुबह होते ही गांव के लोग जब मंदिर के तरफ गए तो देखा कि चोरों के पैर में बेड़िया पड़ी हुई है। ग्रामीणों ने चोर को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया था। जिसके बाद से सनदान देवी मंदिर के नाम से संदना नाम पड़ा। संदना किसी कस्बे से कम नहीं लगता है। इस गांव में प्राचीन सनदान देवी का मंदिर और ठाकुर द्वारा है। ठाकुर द्वारा में भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा विराजमान है। यहां प्रति वर्ष श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का मेला होता है।

गांव के प्रधान रहे बुजुर्ग गिरीश सिंह बताते हैं कि 50–60 वर्ष पहले संदना में घर नहीं थे। सिर्फ सनदान देवी का मंदिर व ठाकुर द्वारा था। परमहंस सुंदरानंद आश्रम, साईं धाम व एक किमी दूरी पर डगरहा आश्रम व हनुमान कुटी है। चूंकि ये सिधौली–नैमिष मुख्य मार्ग पर था, इसलिए आसपास गांव के लोग आकर यहीं बस गए। गांव में बाजार प्रतिदिन लगती है। साथ ही पूरे कस्बे में 700 से भी अधिक छोटी–बड़ी दुकानें हैं। यहां से लोगों को रोजगार मिलता है। यहां हर वर्ष देवी जागरण होता है। पिछले 27 साल से हो रहे जागरण में आसपास के गांवों से कई हजार महिला–पुरुष श्रद्धालु शामिल होते हैं।

मन्दिर तक जाने वाला मार्ग है जर्जर

संदना कस्बे से होकर सनदान देवी मंदिर तक जाने वाला मार्ग में कीचड़ भरा हुआ है आने जाने वाले लोगो को गन्दगी होने के कारण काफी समस्या का सामना करना पड़ता है। बताते चलें कि यह मार्ग निमतापुर, लोदखेरवा सहित दर्जनों गांवों को आपस मे जोड़ता हुआ मछरेहटा मार्ग में मिलता है। कई बार अखबार में प्रकाशित किये जाने के बाद भी जिम्मेदार अधिकारी अपने आखों पर पट्टी बांधे हुए है। ग्रामीण रोहित, पवन सिंह, शशांक, दिलीप, सौरभ, कुलदीप शुक्ला, पप्पू, सुरेन्द्र अवस्थी आदि लोगो ने विरोध जताते हुए मार्ग को सही कराए जाने की मांग की है।

कोतवाली का निरीक्षण कर बैरकों का देखा हाल, साफ सफाई के निर्देश किए जारी

हरदोई ।कोतवाली में को आयोजित समाधान दिवस में डीएम एसपी ने .को फरियादियों की शिकायतें सुन निस्तारण करने के निर्देश दिए हैं। डीएम ने च्करोडों को कब्जा मुक्त कराकर मनरेगा से मिट्टी डलवाने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह एवं पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने लेखपालों से कहा कि भूमि विवाद, चकरोड व नाली की समस्याओं को गंभीरता से लेकर पुलिस के सहयोग से उनका त्वरित निस्तारण करें ।चकरोडो को कब्जा मुक्त कराकर पर मनरेगा से मिट्टी डलवाए ।इस मौके पर कुल राजस्व विभाग की 11 शिकायतें आई। जिसमें 3 शिकायतों का मौके पर निस्तारण किया गया। दोनों अफसरों ने इसके बाद हरपालपुर कोतवाली का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान उन्होंने जर्जर पुलिस बैरकों का हाल देखा। वहीं गुरुवार की रात हरपालपुर कोतवाली में तैनात एक महिला कांस्टेबल मधुबाला को जहरीले सांप ने काट लिया था वही जिला अधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने पहुंचकर कोतवाली के प्रांगण में फैली गंदगी एवं बैरक का रखरखाव देखकर उन्होंने परिसर की साफ–सफाई समेत सभी व्यवस्थायें दुरुस्त करने के प्रभारी निरीक्षक सुनील कुमार सिंह को निर्देश जारी किए हैं ।उधार अरवल थाने में आयोजित समाधान दिवस में .. उप जिलाधिकारी सवायजपुर राकेश सिंह एवं क्षेत्राधिकारी हरपालपुर विनोद कुमार द्विवेदी ने फरियादियों की शिकायतें सुनी है। जिसमें कुल 3 शिकायतें आई। जिसमें से पुलिस विभाग की एक शिकायत का मौके पर निस्तारण कर दिया गया। इस मौके पर अरवल थानाध्यक्ष छोटेलाल उप निरीक्षक मूलचंद मोहनलाल मौजूद रहे।

भाजपा जिलाध्यक्ष ने किया रामलीला मेले का शुभारम्भ

हरदोई ।नगर के मोहल्ला पठकाना में भाजपा जिलाध्यक्ष सौरभ मिश्र ने श्री रामलीला मेला का शुभारम्भ किया। साथ ही कई लीलाओं का मंचन सम्पन्न हुआ।

बीती रात मोहल्ला पठकाने की रामलीला में विशिष्ठ उपाध्यक्ष नरेश चंद्र मिश्रा व राजेन्द्र मिश्रा ने संयुक्त रूप से हनुमान चित्र पर माल्यार्पण कर पूजा–अर्चना की तदुपरांत गणपति बप्पा की आरती में भाजपा जिलाध्यक्ष के साथ श्री रामलीला समिति के संरक्षक सुरेन्द्र नाथ मिश्रा, हरि नाथ त्रिपाठी, डॉ मुरारीलाल गुप्ता, अध्यक्ष संजय मिश्रा बबलू, महामंत्री मधुप मिश्रा, मंत्री ऋषि कुमार मिश्रा, आशीष मोहन तिवारी राजू ,आरती मिश्रा, मनो विनोद अवस्थी,विशिष्ठ उपाध्यक्ष शशि कुमार मिश्रा, राम मोहन गुप्ता,कमलेश

वर्मा, रमेश रस्तोगी, पवन अरोड़ा,योगेश अरोड़ा, अनूप पांडेय, मुकेश अवस्थी,मंदीप मिश्रा, अनमोल गुप्ता,सत्य वीर शुक्ला,राजन तिवारी, धर्मवीर यादव,दीपक तिवारी, शिव नायक मिश्रा, वैभव शुक्ला, पुष्पेद्र मिश्रा,आशीष अवस्थी आदि सम्मिलित हुए और फिर श्री रामलीला मेला शुभारंभ की घोषणा करते हुए नाट्य कार्यक्रम की शुरुआत हो गई। बीती रात की लीलाओं में ब्रह्मा जन्म एवँ नारद मोह प्रथ्वी पुकार मनु शतरूपा नाटक का सफल मन्चन दर्शकों द्वारा हृदय से सराहा गया। उपरोक्त जानकारी श्री रामलीला मेला मीडिया प्रभारी ओमदेव दीक्षित द्वारा दी गई है।

उद्योग बंधु द्वारा स्वरोजगार मेले के आयोजन का हुआ समापन

दैनिक बुद्ध का संदेश
सोनभद्र ।उद्योग बंधु द्वारा आयोजित स्वरोजगार मेले का समापन

हुआ जिसमे मुख्य अथिति के रूप में उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल सोनभद्र के पदाधिकारियों को बुलाया गया था, जिसमे उत्तर प्रदेश के जिलाध्यक्ष राजेश गुप्ता ,वरिष्ठ जिलाउपाध्यक्ष संदीप सिंह चंदेल ,जिला प्रवक्ता प्रकाश केशरी ,जिला संगठन मंत्री अजीत जायसवाल ,युवा ब्यापार मण्डल क जिलाध्यक्ष रमेश जायसवाल ,नगर अध्यक्ष आनंद जायसवाल,आनंद गुप्ता और आईटी सेल के जिलाध्यक्ष अजय केशरी मौजूद रहे। जिसमे जिलाध्यक्ष राजेश गुप्ता ने अपने अभिवादन में बोला की माननीय प्रधानमंत्री जी लोकल फार वोकल को बढ़ावा देने के लिए सोनभद्र के सभी व्यापारी किसान और बुनकरों को संबोधन करते हुए कहा कि ये लोग अपने व्यापार को अधिक से अधिक फैलाए जिससे आम जनमानस को रोजगार मिले और देश की तरक्की में अपना योगदान करे। तथा उद्योग बंधु के अधिकारियों का भी अभिवादन किया की ऐसी व्यवस्था कराकर के व्यापारियों के हितों को ध्यान दिया गया। जिसपे सभी अधिकारियों ने भी व्यापार मंडल के सभी पदाधिकारियों का भी अभिवादन करते हुए स्वरोजगार मेले का समापन किया।

मतदाताओं की वृद्धि 20 अक्टूबर तक

जौनपुर ।अपर जिलाधिकारी (वित्तध्राजस्व) निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (नगरी निकाय) रामप्रकाश ने अवगत कराया है कि राज्य निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा निर्देशित किया गया है कि नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन में परिसीमन से प्रभावित निकाय विस्तारित उच्चीकृत, नई निकाय में बीएलओ द्वारा मतदान स्थल के सभी मतदाताओं का घर घर जाकर सत्यापन करके वृद्धि, शुद्धि या लोप की कार्रवाई 5 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक की जाएगी। जनपद में नई निकाय विस्तारित निकाय रामपुर, कचगांव, गौराबादशाहपुर नई एवं मुंगराबादशाहपुर विस्तारित होंगे। राज्य निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश लखनऊ के निर्देश के क्रम में नगरी निकाय सामान्य निर्वाचन 2022 में परिसीमन में अप्रभावित निकायों (नगर पालिका परिषद जौनपुर एवं शाहगंज, नगर पंचायत केराकत, मछलीशहर, मड़ियाहूं, खेतासराय, जफराबाद, बदलापुर) में बीएलओ द्वारा मतदान स्थल के सभी मतदाताओं का घर–घर जाकर सत्यापन करके वृद्धि, शुद्धि या लोप की कार्रवाई 20 सितंबर तक की जा चुकी है। 01 जनवरी 2022 तक 18 वर्ष या अधिक आयु के अर्ह नागरिकों के नाम निर्वाचक नामावली में सम्मिलित किए जाएंगे।

तेज रफ्तार ट्रैक्टर ट्राली ने साईकिल सवार छात्रों को मारी टक्कर

हादसे में एक छात्र की मौत,दूसरा घायल,अस्पताल में कराया गया भर्ती

हरदोई। तेज रफ्तार ट्रैक्टर ट्राली की टक्कर से साइकिल सवार एक छात्र की मौत हो गई जबकि उसका साथी घायल हो गया। दरअसल दोनों छात्र एक ही साइकिल से कोचिंग से वापस लौट रहे थे तभी पीछे से उनकी साइकिल में एक ट्रैक्टर ट्राली ने टक्कर मार दी जिससे एक छात्र की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया ।जिसे उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है ।पुलिस ने दुर्घटना को अंजाम देने वाले ट्रैक्टर ट्राली को कब्जे में लिया है और पूरे मामले में अग्रिम कार्रवाई में जुटी है। सड़क हादसे का यह मामला थाना कोतवाली शहर इलाके में शहर के सर्कुलर रोड का है ।आवास विकास कॉलोनी के रहने वाले हरिओम मिश्रा का 13 वर्षीय बेटा यश क्रीसेंट एकेडमी में सातवीं क्लास का छात्र था जबकि उसके पड़ोस में रहने वाला साथी दिव्यांश शुक्ला (13) पुत्र अनिज कुमार शुक्ला वैदिक विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में आठवीं का छात्र था ।दोनों आज शहर के रेलवेगंज इलाके में एक ही साइकिल पर सवार होकर ट्यूशन पढ़ने के लिए गए थे और वहां से वापस लौट रहे थे ।तभी क्रीसेंट एकेडमी स्कूल के सामने एक तेज रफ्तार ट्रैक्टर ट्राली ने पीछे से साइकिल में टक्कर मार दी जिससे यश की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई जबकि दिव्यांश शुक्ला गंभीर रूप से घायल हो गया जिसे उपचार के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है ।पुलिस ने मृतक छात्र के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है ।वहीं दुर्घटना को अंजाम देकर ट्रैक्टर चालक मौके से फरार हो गया ।मौके पर पहुंची पुलिस ने घटनास्थल का मौका मुआयना किया और ट्रैक्टर–ट्राली को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्रवाई में जुटी है।

विद्यालयों में युवा पर्यटन क्लब की स्थापना होगी

जौनपुर। जनपद के विद्यालयों में युवा पर्यटन क्लब के माध्यम से पर्यटक राजदूत तैयार किए जाएंगें। इसके लिए विद्यालयों में ''युवा पर्यटन क्लब'' स्थापित करने की पहल की गई है। इस पहल हेतु विभिन्न विद्यालयों में स्थापित किए जा रहे ''युवा पर्यटन क्लब'' राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देंगे और माननीय प्रधानमंत्री जी के ''एक भारत, श्रेष्ठ भारत'' एवं ''देखो अपना देश'' के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाएंगे। इस पहल हेतु कक्षा छठी से लेकर उच्च कक्षाओं के विद्यार्थियों हेतु विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों में ''युवा पर्यटन क्लब'' स्थापित किए जाने हैं, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी दोनों शामिल होंगे। युवा पर्यटन क्लब, पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करेंगे। एक तरफ इन क्लबों के युवा सदस्य भारत की समृद्ध विविधता और इसकी सभ्यतागत मूल्यों के संपर्क में आने से राष्ट्र के प्रति अपनेपन की भावना बढ़ाएगे, वहीं दूसरी ओर जैसे–जैसे पर्यटक राजदूत बनेंगे, भारत दुनिया का पसंदीदा स्थल बन जाएगा, जिसका हमारी अर्थव्यवस्था पर व्यापक प्रभाव पड़ेगा। इसकी स्थापना जिला विद्यालय निरीक्षक एवं बेसिक शिक्षा अधिकारी के माध्यम से कराए जाने निर्देश प्रदान किए गए हैं।

नाली–नालों की सफाई कराएं और जल भराव की समस्या से नगरवासियों को मुक्ति दिलाएं–एमपी सिंह

गांव में शान्ति बनाये रखने हेतु दबंग,आसामाजिक, आराजक व भूमिमाफियों पर नजर रखें:–राजेश द्विवेदी

हरदोई ।माह के चर्तुथ .नवागत जिलाधिकारी एमपी सिंह की अध्यक्षता में थाना साण्डी एवं थाना हरपालपुर में थाना समाधान दिवस का आयोजन किया गया। थाना साण्डी मेंआयोजित समाधान दिवस में ग्राम पिन्डारी एवं हसनापुर में आबादी की भूमि पर दंबगों द्वारा अवैध निर्माण किये जाने की शिकायत पर जिलाधिकारी ने संबंधित क्षेत्र के कानूनगो व लेखपाल को निर्देश दिये कि आज ही पुलिस टीम के साथ उक्त आबादी की भूमि की पैमाइश करें और अवैध कब्जा ध्वस्त कराते हुए कब्जा करने वालों के विरूद्व एफआईआर दर्ज कराये और एंटी भूमाफिया एक्ट के अन्तर्गत कार्यवाही करते हुए जेल भेजें। थाना समाधान दिवस में साण्डी नगरीय निकाय के नाली–नालों आदि की सफाई न कराने तथा जल भराव की शिकायत पर जिलाधिकारी ने नगर पालिका के लिपिक को निर्देश दिये कि उक्त नाली– नालों की तत्काल सफाई कराये और जल भराव की समस्या से नगरवासियों को मुक्ति दिलायें। साण्डी बस स्टाप पर शौचालय की व्यवस्था न होने की शिकायत के सम्बन्ध में जिलाधिकारी ने नगर पालिका को निर्देश दिये कि उचित स्थान का निर्धारण कर आम जनता की सुविधा के लिए शौचालय का निर्माण करायें। इसके उपरान्त जिलाधिकारी ने पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी के साथ थाना हरपालपुर का निरीक्षण किया तथा टूटी दीवारों, जर्जर आवासीय भवन एवं जल भराव को देखकर थानाध्यक्ष एके सिंह को निर्देश दिये कि टूटी दीवारों को ठीक कराये तथा जर्जर भवनों का निस्तारण करायें। इसके बाद थाना दिवस में चकरोड पर अवैध कब्जों की शिकायत पर डीएम ने कानूनगो तथा लेखपालों से कहा कि चकरोड कब्जा मुक्त कराने के दौरान चकरोड की चौड़ाई के हिसाब से मनरेगा से मिट्टी डलवाकर ऊंचा करायें और चकरोड तोड़ने एवं दोबारा कब्जा करने वालों के विरूद्व कड़ी कार्यवाही करें। साण्डी व हरपालपुर मेंआयोजित थाना समाधान दिवस में पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने कहा कि राजस्व एवं पुलिस विभाग के अधिकारी समन्वय बनाकर नियमित ग्रामों का भ्रमण करें और गरीबों की पट्टे तथा अन्य सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा करने वालों के विरूद्व अभियान चलाकर कार्यवाही करें। उन्होने थानाध्यक्षों को निर्देश दिये कि क्षेत्र में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने हेतु गांव के दबंग, आसामाजिक, आराजक तथा भूमि माफियों की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रतिदिन बीट सिपाही तथा चौकीदारों के माध्यम से प्राप्त करें। समाधान दिवस में जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार, कानूनगो तथा लेखपाल उपस्थित रहे।

मंडल रेल प्रबंधक ने ली संचालन और सुरक्षा की जानकारी

भाटपाररानी। मंडल रेल प्रबंधक वाराणसी रामाश्रय पांडेय स्पेशल ट्रेन से शाम 5:55 बजे भाटपाररानी पहुंचे और रेलवे स्टेशन का आधो घंटे तक निरीक्षण किए। ट्रेन से उतरते ही उन्होंने नगर व क्षेत्र के लोगों द्वारा ज्ञापन व उनकी समस्याओं को सुना। मंडल रेल प्रबंधक को लोगों ने ट्रेनों के ठहराव, प्लेटफॉर्म नंबर एक के विस्तारीकरण, पेयजल की समस्या आदि से अवगत कराया तथा उसके समाधान की मांग की। ट्रेनों के ठहराव के बारे में उन्होंने लोगों से कहा कि टिकटों की बुकिंग नहीं होने के कारण ट्रेनों का ठहराव बंद कर दिया गया है। चालू करने का पावर केवल रेलमंत्री को ही है। आप उनसे मिलें। प्लेटफॉर्म नंबर एक के विस्तारीकरण के लिए मापी हो चुकी है। उसके बाद वे पैदल पुल से चलकर प्लेटफॉर्म नंबर दो पर पहुंचे। प्लेटफॉर्म की स्थिति को देखा और आवश्यक निर्देश दिए। वहां से स्टेशन अधीक्षक कार्यालय पहुंचे, जहां ट्रेनों के संचालन और सुरक्षा के बारे में जानकारी ली। इसके बाद प्रतीक्षालय का निरीक्षण किया। बाहर निकलकर परिसर में लगे जलभराव आदि को भी देखा और पुनरूभटनी रेलवे स्टेशन के लिए रवाना हो गए। इस दौरान स्टेशन अधीक्षक शशि भूषण, स्टेशन मास्टर चंदन, भूपेश, संजय कुमार, श्यामसुंदर, अनिल यादव तथा नगर के संतोष पांडेय, संजय जायसवाल, देवेश गुप्त, उमेश शाही सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

मौर्य एक्सप्रेस के ठहराव को लेकर डीआरएम से मिले क्षेत्रीय लोग

बनकटा/रामपुर बुजुर्ग। डीआरएम के आने की सूचना पर क्षेत्र के सैकड़ों लोग पहुंचे, उन्होंने मौर्य एक्सप्रेस के ठहराव को लेकर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा है कि कोविड काल के पूर्व मौर्य एक्सप्रेस का ठहराव बनकटा में होता था, लेकिन कोविड के बाद सभी ट्रेनों का संचालन शुरू कर दिया गया, लेकिन मौर्य एक्सप्रेस का बनकटा स्टेशन पर ठहराव नहीं किया गया। यहां से जिला मुख्यालय की दूरी पचास किमी है। क्षेत्र में पंद्रह इंटर कॉलेज, दो डिग्री कॉलेज के साथ ही तमाम सरकारी कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों, व्यापारियों, छात्र, कचहरी में जाने वाले वादकारियों तथा मरीजों को जिला मुख्यालय पर आने–जाने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। लोगों ने डीआरएम से मौर्य एक्सप्रेस के ठहराव, आरक्षण काउंटर लगाने तथा रेलवे परिसर से बंजरिया गांव को जोड़ने वाली निर्माणाधीन मार्ग को शीघ्र पूरा कराने की मांग की। इस पर डीआरएम ने शीघ्र ही यूटीएस काउंटर खुलवाने तथा मौर्य एक्सप्रेस के ठहराव के लिए उचित कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

सुकरौली गांव में डेंगू का दूसरा मरीज मिला

नौतनवां। क्षेत्र के गांव सुकरौली में डेंगू का दूसरा मरीज मिलने से ग्रामीणों में हड़कंप मच गया है। जानकारी मिलने पर स्वास्थ्य कर्मियों की टीम ने गांव में पहुंचकर 116 ग्रामीणों की जांच की। ब्लड की स्लाइड बनाई और गांव में एंटीलार्वा का छिड़काव तथा फागिंग कराया गया। जानकारी के मुताबिक सुकरौली गांव में .रहीमा (35) डेंगू पॉजिटिव मिली। डेंगू का दूसरा मरीज मिलने से गांव के लोगों में दहशत है। जानकारी मिलने पर सहायक मलेरिया आधिकारी अनिल कुमार, मलेरिया निरीक्षक अक्षय कुमार तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रतनपुर से स्वास्थ्य कर्मियों की टीम ने गांव पहुंचकर मरीज के परिजनों तथा आसपास के लोगों का जांच की। स्वास्थ्य पर्यवेक्षक अभय कुमार चौधरी ने बताया कि कुल 116 लोगों का जांच कर स्लाइड बनाई गई है। लोगों को संक्रामक बीमारियों के प्रति जागरूक किया गया। बता दें कि बीते बुधवार को भी 33 वर्षीय गुलाम हैदर डेंगू पॉजिटिव मिले थे। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र रतनपुर के अधीक्षक डॉ. अखिलेश कुमार यादव ने बताया कि डेंगू पॉजिटिव मरीज पाया गया। मौके पर स्वस्थ्य कर्मियों ने जांच कर दवा का छिड़काव की।

गोरखपुर में तीन एसडीएम के कार्यक्षेत्र बदले,एक एसडीएम गीडा से किए गए अटैच

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। गीडा में जमीन का अधिग्रहण तेज करने के लिए जिला प्रशासन की ओर से एक एसडीएम को गीडा से अटैच किया गया है। इसके साथ ही कुछ एसडीएम के कार्यक्षेत्र में बदलाव किया गया है।सहजनवा के एसडीएम न्यायिक अनुपम मिश्र को गीडा से संबद्ध किया गया है। वह जमीन अधिग्रहण से जुड़े मामले देखेंगे और सीईओ द्वारा सौंपे गए अन्य कार्य करेंगे।शुक्रवार को जारी आदेश में तीन एसडीएम के कार्यक्षेत्र बदले गए हैं। सहजनवा में एसडीएम न्यायिक के रूप में कार्यरत दिग्विजय सिंह को कैंपियरगंज में इसी पद पर भेजा गया है। जिले में नए आए डिप्टी कलेक्टर राजू कुमार को अपर नगर मजिस्ट्रेट द्वितीय और प्रदीप कुमार सिंह को एसडीएम न्यायिक बांसगांव बनाया गया है। इसके साथ ही उन्हें जीडीए से संबद्ध किया गया है।वह जीडीए में भूमि व्यवस्था और उपाध्यक्ष द्वारा सौंपे गए कार्य करेंगे।अपर उप जिलाधिकारी सदर के साथ एसडीएम न्यायिक चौरीचौरा व बांसगांव का काम देख रहे पवन कुमार के पास अपर उप जिलाधिकारी सदर के साथ एसडीएम न्यायिक चौरीचौरा की जिम्मेदारी रहेगी।

सीडीओ ने सांसद विधायक निधि कार्यों का किये समीक्षा बैठक

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। विकास भवन सभागार में सीडीओ संजय कुमार मीना ने

विकास कार्यों में चार चांद लगाने वाले विधायक और सांसद निधि के कार्यों की समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिया। सीडीओ ने कहा कि चल रहे प्रत्येक विधायक और सांसद निधि के कार्यों की रूपरेखा तैयार कर प्रस्तुत किया जाए कि किस विधायक व सांसद निधि से किन–किन क्षेत्रों में किस किस मद के कितनी धनराशि के विकास के कार्य कराए जा रहे हैं कराए जा रहे कार्यों को कब तक पूर्ण कर लिए जाएंगे पिछले बजट के कितने कार्य अभी तक लंबित हैं और किन कारणों से लंबित हैं अवगत कराया जाए संबंधित विभाग के कर्मचारियों को सख्त निर्देश सीडीओ ने दिया पूरी आख्या बनाकर 3 दिनों के अंदर कार्यालय में प्रस्तुत किया जाए जिससे उन कार्यों का अवलोकन कर जल्द से जल्द कार्यों को कराने के लिए कारदायी संस्थानों को निर्देशित किया जाए बैठक में पीडी अनिल सिंह सहित अन्य संबंधित मौजूद रहे।

जेल गेट से फरार हुए पचास हजार के इनामी बदमाश को एसटीएफ ने पकड़ा

देवरिया। जेल गेट के पास से पुलिस अभिरक्षा से 11 साल से फरार चल रहे पचास हजार रुपये के इनामी बदमाश को वाराणसी की एसटीएफ ने गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए बदमाश पर बिहार, कुशीनगर में हत्या, अपहरण और देवरिया सदर कोतवाली में पुलिस अभिरक्षा से फरार होने का मुकदमा दर्ज है।

जिला कारागार के पास कुशीनगर से पेशी से वापस लौटते समय बिहार के बगहा थाना क्षेत्र के कैलाश नगर निवासी रामआसरे केवट दिसंबर 2022 में पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया था। सिपाही की तहरीर पर पुलिस ने कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस के अनुसार बदमाश ने फरार होने के बाद उत्तर प्रदेश–बिहार के सीमावर्ती जनपद कुशीनगर एवं पश्चिमी चंपारण में कुख्यात अपराधी रूदल यादव (एसटीएफ गोरखपुर के साथ हुए मुठभेड़ में मृत) गैंग का सक्रिय सदस्य है। पुलिस सूत्रों के अनुसार रूदल यादव अक्सर रामआसरे केवट के घर पर आकर रुका करता था। इसके साथ ही गैंग द्वारा अपहरण कर अपहृत व्यक्ति को लाकर रामआसरे केवट के घर पर रखा जाता था। इसी दौरान रामआसरे केवट की जान–पहचान रूदल यादव एवं इसके गैंग के अन्य सदस्यों से हो गई। इनके साथ मिलकर हत्या व अपहरण जैसे जघन्य अपराधों को अंजाम देने लगा।

इसी क्रम में वर्ष 2007 में रामआसरे केवट ने अपने गैंग के साथ मिलकर जनपद कुशीनगर के थाना जटहॉ बाजार निवासी इंद्रासन चौरसिया व रामनिवास चौरसिया की घर से ले जाकर सनसनीखेज तरीके से हत्या कर दी थी। इसके बाद जनपद कुशीनगर के ही थाना हनुमानगंज में किशुनदेव यादव एवं बीरबल यादव की हत्या कर रामआसरे केवट अपने साथियों के संग फरार हो गया था।

इसी दौरान रामआसरे केवट ने गैंग के साथ मिलकर बिहार के जनपद पश्चिमी चंपारण के सूजीघाट से नारद के लड़के का अपहरण किया गया था। इसमें रामआसरे केवट आदि को बिहार पुलिस ने गिरफ्तार करते हुए अपहृत की सकुशल बरामदगी की थी। इसके बाद कुशीनगर पुलिस ने रामआसरे केवट का वारंट (बी) बनवाकर देवरिया जिला जेल में दाखिल किया था।

रामआसरे केवट को कुशीनगर में न्यायालय के समक्ष पेशी कराकर वापस देवरिया जेल में दाखिल करने लाते समय पांच दिसंबर 2011 को जिला कारागार देवरिया गेट के पास से पुलिस अभिरक्षा से दो अन्य अभियुक्तों के साथ फरार हो गया था। जिसे एसटीएफ ने वाराणसी से गिरफ्तार कर लिया है। एसटीएफ के अपर पुलिस अधीक्षक वाराणसी विनोद कुमार ने बताया कि बदमाश को गिरफ्तार कर लिया गया है, जो देवरिया से पुलिस अभिरक्षा से फरार था।

बड़े बकायेदारों से होगी राजस्व वसूली : डीएम

देवरिया। जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने देर शाम कलेक्ट्रेट सभागार में राजस्व विभाग के अगस्त माह के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने राजस्व न्यायालयों में लंबित वादों के त्वरित निस्तारण के अधिकारियों को निर्देश दिए। साथ ही अभियान चलाकर बड़े बकायेदारों से वसूली करने को कहा। जिलाधिकारी ने कहा कि राजस्व वादों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित किया जाए। अगस्त माह में वादों के त्वरित निस्तारण के जो निर्देश दिए गए थे। उसका सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहा है। अगस्त माह में जिलाधिकारी, अपर जिलाधिकारी, उपजिलाधिकारी, तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार न्यायालयों द्वारा कुल 3,278 राजस्व वादों का निस्तारण किया गया। डीएम ने कहा कि जनपद स्तर पर पांच वर्ष से अधिक समय से लंबित वादों का त्वरित निस्तारण किया जाए। जनपद स्तर पर सर्वाधिक 310 प्रकरण अपर उपजिलाधिकारी प्रथम के न्यायालय तथा 244 राजस्व वाद मुख्य राजस्व अधिकारी के न्यायालय में लंबित हैं। तहसील स्तर पर सर्वाधिक देवरिया सदर में 1135 प्रकरण लंबित पाए गए। उन्होंने जनपद के 10 बड़े बकायेदारों से राजस्व वसूली का मुद्दा समीक्षा बैठक में उठाया। मुख्य राजस्व अधिकारी अमृत लाल बिंद ने बताया कि रूबी सिंह, गुरुदेव मिश्र, श्याम सुंदर यादव, झब्बू लाल, बाबूनंदन यादव, मनीष कुमार राय, विनय कुमार यादव, नंदलाल गुप्ता, रामायण गिरी तथा धीरेंद्र जनपद के 10 बड़े राजस्व बकायेदार हैं। जिलाधिकारी ने इन सभी के साथ हर तहसील के दस–दस बड़े बकायेदारों से अभियान चलाकर राजस्व वसूली करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना कल्याण योजना के तहत 720 लाभार्थियों के खाते में 2850 लाख रुपये हस्तांतरित किए जा चुके हैं। भुगतान के लिए कुल 27 दावे लंबित हैं। जिलाधिकारी ने इन सभी लंबित प्रकरणों को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारित करने को कहा। डीएम ने सभी तहसीलों में भू–राजस्व वसूली तथा पट्टा आवंटन की भी समीक्षा की। उन्होंने सलेमपुर तहसील में जारी गतिरोध के विषय में जानकारी प्राप्त कर एसडीएम सलेमपुर से विस्तृत रिपोर्ट तलब की। उन्होंने तहसील के अधिवक्ताओं के साथ संवाद स्थापित कर गतिरोध समाप्त करने के निर्देश दिए। इस दौरान एडीएम वित्त एवं राजस्व नागेंद्र कुमार सिंह, सीआरओ अमृत लाल बिंद, एडीएम प्रशासन गौरव श्रीवास्तव, एसडीएम सदर सौरभ सिंह, एसडीएम रुद्रपुर ध्रुव कुमार शुक्ला, एसडीएम बरहज गजेंद्र सिंह, एसडीएम भाटपाररानी संजीव उपाध्याय, एसडीएम सलेमपुर अरुण कुमार आदि मौजूद रहे।

पहली अक्टूबर से गोरखपुर जंक्शन पर 5 मिनट कम रुकेंगी ये 40 ट्रेनें

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। पहली अक्तूबर से गोरखपुर जंक्शन पर 40 ट्रेनों का ठहराव 5 मिनट कम हो जाएगा। इन ट्रेनों का स्टॉपेज 15 मिनट की बजाये 10 मिनट का होगा। जंक्शन पर प्लेटफार्मों के हमेशा पैक रहने की समस्या को देखते हुए रेल प्रशासन एक अक्तूबर से बड़े बदलाव की तैयारी में जुटा है।कृषक, अवध, नौतनवा–दुर्ग, बापूधाम, सप्तक्रांति, जनसाधारण और चंपारण हमसफर को छोड़कर गोरखपुर से गुजरने वाली शेष लगभग 40 ट्रेनें गोरखपुर जंक्शन पर 15 मिनट की जगह 10 मिनट ही रुकेंगी। इन सभी ट्रेनों के स्टापेज में पांच मिनट की कटौती की जा रही है। इस बदलाव से सबसे बड़ा फायदा ये होगा कि प्लेटफार्म पांच मिनट पहले ही खाली हो जाएगा। इससे आउटर पर खड़ी ट्रेनों को आसानी से लाइन क्लीयर मिल सकेगा।

दो साल बाद छप रहा है टीएजी ट्रेन एट ए ग्लांस

कोविड के चलते बीते दो साल से बंद ट्रेन एट ए ग्लांस (टीएजी) की छपाई दोबारा हो रही है। इस बार एक अक्तूबर को रेलवे टाइम टेबल नए कलेवर में आएगा। इसकी कीमत 30 रुपये की बजाय 100 रुपये होगी। यह टाइम टेबल ई–टीएजी के रूप में भी उपलब्ध होगा। प्रति डाउनलोड 30 रुपये शुल्क लिया जाएगा। टाइम टेबल प्रकाशित करने और बुक स्टॉलों पर वितरित कराने की जिम्मेदारी आईआरसीटीसी को दी गई है।एनई रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी पंकज कुमार सिंह ने बताया कि नए टाइम–टेबल में गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों के स्टॉपेज की टाइमिंग को भी ऑप्टिमाइज किया जा रहा है। गोरखपुर स्टेशन पर क्विक वाटरिंग सिस्टम लग जाने से स्टॉपेज का समय घटाया जा सकता है।

शारदीय नवरात्रि आते ही शुरु हो जाता है, रामपुर बघौरा में रामलीला

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोरखपुर। आधुनिकता के दौर में भी गांवों में जीवंत है। रामलीला का मंचन इसका जीता जागता स्वरूप गोरखपुर जनपद के दक्षिणांचल में स्थित गोला तहसील क्षेत्र के रामपुर बघौरा गांव में देखने को मिलता है। यहां के सभी जाति धर्म के लोग मिल कर रामलीला का आयोजन करते हैं। और रामलीला में भाग भी लेते हैं। यहां के रामलीला में एक बात और देखने को मिलती है। वह है, हिन्दू – मुस्लिम एकता की। यहां कुछ पात्र गांव के ही होते हैं। जिसमें परशुराम और कुम्भकर्ण का रोल एक मुस्लिम युवक द्वारा निभाया जाता है। मेला के संयोजक संजय श्रीवास्तव बतातें है कि हमारे यहां माँ शक्ति की मुर्ति स्थापना के साथ साथ रामलीला का मंचन चालू हो जाता है। यह आयोजन वर्ष 1996 से आरम्भ हुआ है। और अनवरत चल रहा है। रामलीला आयोजन में पुरे गांव का भरपुर सहयोग रहता है। इतना ही नहीं क्षेत्र के देश विदेश कमाने वाले भी इस नौरात्रि के इंतजार में रहते हैं। जैसे ही पित्रिपक्ष समाप्त होता है लोग छुट्टियां लेकर अपने घर आते हैं। और रामलीला आयोजन का लुप्त उठाते हैं। रापुरबघौरा गांव के बड़े बुजुर्ग अछैबर शुक्ल (शास्त्री जी)कहते हैं कि रामलीला का आयोजन होने से लोग राम के चरित्र को आत्मसात करने का प्रयास करते हैं। शास्त्री जी ने यह भी कहा कि ऐसा माना जाता है कि एक बार राम राम कह देने मात्र से एक माला के जप के बराबर फल मिलता है, यहां तो बड़े–बड़े ध्वनिविस्तारक यंत्र लगा कर नौ दिन राम का गुणगान और लीला कीया जाता है। इसका फल तो पुरे क्षेत्र को मिलता ही है। इसके साथ साथ हमारे सनातन धर्म के मर्यादा का भी ज्ञान मिलता है। रामपुर बघौरा रामलीला में अधिकांश पात्र गांव के होते हैं जो अपनी इच्छा से भाग लेते हैं। कोई भी पात्र पारिश्रमिक नही लेता है। यहां रामलीला में मुख्य आकर्षण का केन्द्र राम वनगमन, सीता विवाह, परशुराम लक्ष्मण संवाद और भरत मिलाप होता है। जो बहुत ही मनोहारी और भाऊक कर देता है।

9 वर्ष की आयु से युवक बनाता है मां दुर्गा की प्रतिमा

कलाकारी देख कर लोग कर रहे प्रशंसा

दैनिक बुद्ध का संदेश

डुमरियागंज। नवरात्रि पर्व करीब आ रहा है तो कलाकारों ने भी मां दुर्गा की प्रतिमा को अंतिम रूप देने में दिन रात एक कर दिए है। अक्सर मां दुर्गा की प्रतिमा बंगाल के ही कलाकार बनाते हैं लेकिन डुमरियागंज नगर पंचायत का एक कलाकार ऐसा भी है जो विगत कई वर्षों से मां की प्रतिमा स्वयं बनाता है और स्थापित करता है संतराम नाम का यह कलाकार अभी 17 साल का है लेकिन उसके काबिलियत की प्रशंसा हर जगह हो रही है संतराम बताता है कि उसे बचपन से ही कलाकारी में रुचि था और मूर्ति बनाने की इच्छा जागृत हुई थी 7 सालों से वह खुद मूर्ति बनाकर अंतिम रूप देकर स्थापित करता है उसने बताया कि इस बार वह 2 और अन्य मूर्ति भी बनाया है बिना किसी प्रशिक्षण के इतना अच्छा मूर्ति बनाकर संतराम ने लोगों में अपनी अलग छवि बनाई है रविवार को संतराम अपनी मूर्ति को अंतिम रूप देने में जुटा था।

शिक्षकों का शिक्षकों के लिए सहयोग ही कल का सहारा बनेगा:गुड्डू खान

दैनिक बुद्ध का संदेश

महराजगंज। शिक्षकों का शिक्षकों

के लिए, शिक्षकों के द्वारा बनाया गये टीचर्स सेल्फ केयर टीम (ज्ैब्ज) के बैनर तले आज नगर के एक मैरेज हाल में ब्लाक स्तरीय तकनीकी कार्यशाला, शिक्षक सम्मान एवं श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका उद्दघाटन मुख्य अतिथि नौतनवा नगर पालिका अध्यक्ष गुड्डू खान विशिष्ट अतिथि खण्ड शिक्षा अधिकारी आनन्द कुमार मिश्र व सह संस्थापक (ज्ैब्ज) महेन्द्र कुमार वर्मा ने माँ सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर किया और मृतक शिक्षक देवेन्द्र कुमार व अश्वनी कुमार तिवारी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दिया तथा संगठन के संचालन में कुछ शिक्षकों द्वारा किये गए अविस्मरणीय सहयोग के लिए सम्मानित किया गया।कार्यक्रम का संचालन रामाज्ञा यादव ने किया।इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने बताया कि षिक्षकों के साथ होने वाली हृदय विदारक घटनाओ के समय संकट में डूबे परिवार के साथ प्रदेश के शिक्षकों को एकजुट खड़ा करने का यह एक बहुत ही नेक, प्रशंसनीय एवं सराहनीय कार्य की शुरुआत है,यह आज का सहयोग ही कल का सहारा बनेगा। खण्ड शिक्षाधिकारी ने बताया कि ष्ज्ैब्ज् टीम द्वारा अब तक 83 दिवंगत परिवारों को पूरी पारदर्शिता के साथ लगभग 15 करोड़ रुपये की आर्थिक मदद दी जा चुकी है इसके अलावा दुर्घटना में घायल 6 परिवारों को 2 लाख 25 हजार रुपये की भी मदद दी गयी। श्री वर्मा ने बताया कि ष्संकट के समय शिक्षक परिवार के हृदय में जो बेदना व पीड़ा होती है उसको अपने शब्दों में बया कर पाना व महसूस कर पाना सम्भव नही है इसके लिए आर्थिक सहायता व सांत्वना देना जीवन जीने को सरल बनाता है। इस अवसर पर संजीव कुमार रजक,सुधेश पाण्डेय, चंद्रशेखर सिंह, मो0 इमरान,विश्वनाथ प्रसाद,राजेश कुमार मौर्य, चरन सिंह,विकाश यादव,सुनील प्रजापति, वेद प्रकाश सिंह,शाहनवाज खान, ज्योति राय,खुर्शेद आलम,प्रमोद पाठक, चंद्रभान प्रसाद,उमेश दिवाकर, राघवेंद्र पाण्डेय, विनोद गौतम, संजय जाय0, चंद्रशेखर, रीता सिंह के अलावा हजारों की संख्या में शिक्षक उपस्थित रहे।

बॉसी में सड़क के लिए धरना देने वाले युवकों से मुकदमा हटाने की मांग किया

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। न्याय एक संकल्प के अध्यक्ष राम कृष्ण पाण्डेय ने उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक से मिलकर जनपद में तीन विभिन्न मुद्दों पर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में प्रथम बांसी में हुए जिगनीहवां सड़क के लिए धरने पर बैठे युवकों पर मुकदमा वापस लेने के लिए,सिद्धार्थनगर के लोगों का टोल प्लाजा फ्री करने के लिए एवं नेशनल हाईवे से सटे ग्राम कटया से भिटिया मिश्र तक अत्यंत जर्जर सड़क बनने के लिए पत्र के माध्यम से कहा राम कृष्ण पाण्डेय ने यह भी कहा कि न्याय एक संकल्प का कार्य जन मुद्दों को उठाना है और जर्जर सड़क के लिए युवकों के ऊपर मुकदमा नहीं बल्कि जर्जर सड़क होने के कारण का पता लगा कर उसके ऊपर कार्यवाही करना न्याय उचित होगा। जिले की बात को पाण्डेय हमेशा उठाते रहे हैं,उनके साथ न्याय एक संकल्प के लगभग दो दर्जन पदाधिकारी मौजूद रहे।

हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण गरीबों का इलाज :ब्रजेश पाठक

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में विकास कार्यो एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए उप मुख्यमंत्री ने चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान मुख्य चिकित्सा अधिकारी से जनपद मे तैनात डाक्टरों के बारे में जानकारी ली गयी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने बताया कि जनपद में कुल 168 डाक्टरों के पद सृजित है जिसमें 131 कार्यरत है। मा0 उपमुख्यमंत्री जी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि आप के पास संशाधन पूरे है। 68 डाक्टर एन0एच0एम0 के कार्य कर रहे है उन्हें इस सूची से बाहर क्यों रखा गया है। एन0एच0एम0 योजना के अन्तर्गत जो डाक्टर तैनात है उनसे भी मरीजो का उपचार कराया जाए। हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण गरीबो को निःशुल्क इलाज देना और उन्हे निःशुल्क दवा उपलब्ध कराना विशेष प्राथमिकता है। क्योकि सिद्धार्थनगर अतिपिछड़े जनपद की श्रेणी में है। मेडिकल कालेज बन जाने के उपरान्त इस जनपद का जिला चिकित्सालय मेडिकल कालेज में समाहित कर दिया गया है इसलिए अभी जिला चिकित्सालय की व्यवस्था नही पायी है। इसके लिए भी प्रदेश सरकार कार्य कर रही है। प्राचार्य

मेडिकल कालेज डा0 ए0के0 झा को निर्देश दिया कि मेडिकल की पढ़ाई कर रहे छात्रों के रहने एवं खाने की व्यवस्था स्वयं जाकर देखे। सांसद डुमरियागंज द्वारा जनपद में डायलिसिस की व्यवस्था बढ़ाये जाने की मांग की। उपमुख्यमंत्री ने प्राचार्य मेडिकल कालेज को निर्देश दिया कि तत्काल डायलिसिस बढ़ाने का प्रस्ताव बनाकर उपलब्ध कराये। इसके अलावा अल्ट्रासाउण्ड की जांच हो। मरीजो को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो। मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिया कि अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी 02 घण्टे ओ0पी0डी0 करे। तथा सी0एच0सी0ध्पी0एच0सी0 का नियमित निरीक्षण करे जिससे कमियों को दूर किया जा सके। प्रभारी प्राचार्य राजकीय मेडिकल कालेज डा0 ए0के0 झा एवं मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 विनोद

कुमार अग्रवाल से चिकित्सालय में निःशुल्क वितरण किये जाने वाले दवाओं की उपलब्धता, रेबीज एवं एन्टी वेनम इन्जेक्शन की उपलब्धता आदि के बारे में पूछताछ करते हुए कहा कि किसी भी दशा में आवश्यक दवाओं की उपलब्धता न रहने पर लोकल परचेज का उपयोग केबल गरीबों के लिए किया जाए। जनपद में सामान्य उपचार हेतु मरीजों को स्थानीय सी0एच0सी0 एवं पी0एच0सी0 पर भर्ती लिया जाए, जिससे अनावश्यक रूप से जिला चिकित्सालय पर मरीजों की भीड़ न बढ़े और जनपद के सभी स्वास्थ्य केन्द्रों पर उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग भी हो सकें। उप मुख्यमंत्री जी ने जनपद में कानून व्यवस्था की समीक्षा के दौरान पुंलिस अधीक्षक से विभिन्न बिन्दुओं जैस–लूट मार, हत्या, डकैती, चोरी, महिला अपराध, दंगा फसाद, यातायात व्यवस्था आदि पर आकड़ेवार जानकारी लेते हुए कहा कि जनपद में कानून व्यवस्था के सुचारू संचालन में बाधा उत्पन्न करने वालों के प्रति सख्त कार्यवाही की जाए। उन्होंने कहा कि जनपद में अवैध टैक्सी स्टैण्डों को हटाया जाए लेकिन आवगमन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए टैक्सी स्टैण्ड को व्यवस्थित रूप से बनवाया भी जाए। नियमों का उल्लघन करने पर गाड़ियों का चालान के वजाय ट्रैफिक नियमों का पालन करने के लिए एनजीओ और विद्यालयों में काउसलिंग से सम्बंधित कार्यशाला का भी आयोजन कराया जाए। जिससे यातायात नियमों का प्रचार–प्रसार हो सके और गरीब आदमी चालान देने दण्ड से बच सकें। माननीय ने शहर के चौराहों को सीसीटीवी कैमरों से आच्छादित किये जाने सम्बधी पुलिस अधीक्षक प्रस्ताव पर सहमति व्यक्त करते हुए इसका आगणन भी तैयार करने के लिए कहा। पुलिस अधीक्षक द्वारा जनपद में स्मार्ट पुलिस व्यवस्था एवं त्वरित कार्यवाही के दृष्टिगत बनाये गये एप के बारे में जानकारी दी गयी। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि महिला सुरक्षा हेतु सभी थानों में महिला हेल्प डेस्क बनाया गया है, जनपद में यातायात व्यवस्था का सुचारू संचालन हो रहा है।

- **अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी 2 घंटे ओपीडी करें**
- **यानी एचएम के 68 डक्टरों भी मरीजों का उपचार करें**
- **जनपद के अवैध टैक्सी स्टैंड ओं को हटाया जाए**
- **किसी भी छोटी बड़ी समस्या के निस्तारण के लिए मीडिया सेल का करें निर्माण**

किसी भी छोटी बड़ी समस्या के त्वरित निस्तारण हेतु मीडिया सेल भी बनाया गया है। पंचायती राज विभाग के कार्यो की समीक्षा करते हुए जिला पंचायत राज अधिकारी से सामुदायिक शैचालयों के संचालन, उसमें साफ–सफाई की व्यवस्था आदि के बारे मे पूछताछ के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी। श्रमिकों का अनिवार्य रूप से रजिस्ट्रेशन कराते हुए योजनाओं का लाभ दिलाने हेतु श्रम प्रर्वतन अधिकारी को निर्देशित किया गया।समीक्षा बैठक में उप मुख्यमंत्री ने जनपद में विभिन्न विभागों द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं विकास एवं निर्माण कार्यो में प्रगति, जल निकासी व्यवस्था, एक जनपद एक उत्पाद, पीएम स्वनिधि योजना, स्थानीय पर्यटन विकास, जनपद में सड़कों की स्थिति, स्थाई एवं अस्थाई गो–आश्रय स्थल एवं मुख्यमंत्री सहभागिता योजना, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आयुष्मान कार्ड, मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना, प्रधानमंत्री आवास (शहरी), जल जीवन मिशन, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, सामुदायिक शौचालय, जनपद में विद्युत ट्रान्समिशन की व्यवस्था, ओवर बिलिंग की शिकायत, सूखा से प्रभावित किसानों को लाभ दिलाये जाने की स्थिति सहित सिचाई विभाग, आपूर्ति विभाग, शिक्षा विभाग, समाज कल्याण आदि द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाओं की सम्बंधित विभागीय अधिकारियों से विभिन्न बिन्दुओं पर जानकारी प्राप्त करते हुए निर्देशित किया है कि लाभार्थीपरक योजनाओं का लाभ बिना किसी बिचौलियों के माध्मय से सीधे पात्र व्यक्तियों तक पहॅचाया जाए, अधिकारीगण स्वंय गॉव में जाकर अपने विभाग से सम्बंधित योजनाओं की जमीनी हकीकत जानने के लिए लाभार्थियों से मिल कर उसका फीडबैक प्राप्त करें। निर्माण कार्यो की दशा में माननीय ने अधिकारीगणों को निर्देशित किया है कि कार्यदायी सस्थाओं के साथ समन्वय बनाये रखें जिससे निर्माण में गुणवत्ता और ससमय पूर्ण कराया जा सकें। अंत में उप मुख्यमंत्री ने अपने जनपद भ्रमण के दौरान जनपद में कानून व्यवस्था, सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन की स्थिति एवं प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुए जनप्रतिनिधियों अधिकारीगणों एवं जनपदवासियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया तथा कहा कि विकास के मुद्दे पर जनपद सिद्धार्थनगर को नम्बर 01 पर लाने के लिए सभी को निष्ठापूर्वक और मेहनत करने की जरूरत है।

सांसद डुमरियागंज जगदम्बिका पाल, विधायक बांसी जय प्रताप सिंह, विधायक कपिलवस्तु श्यामधनी राही, विधायक शोहरतगढ़ विनय वर्मा ने उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक को गौतम बुद्ध की प्रतिमा भेट किया।इस अवसर पर उपरोक्त के अतिरिक्त जिला विकास अधिकारी शेषमणि सिंह, पी0डी0, डी0एफ0ओ0 चन्देश्वर सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी आदर्श, जिला कार्यक्रम अधिकारी शुभांगी कुलकर्णी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी देवेन्द्र कुमार पाण्डेय, उपायुक्त उद्योग दयाशंकर सरोज, जिला कृषि अधिकारी सी0पी0सिंह, उपकृषि निदेशक अरविन्द कुमार विश्वकर्मा, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डा0 एम0पी0सिंह, एवं जनपद स्तरीय अधिकारी एवं आदि उपस्थित रहें।

गांव से ज्यादा बदहाल हो रही हैं मुख्यालय की सड़कें

सिद्धार्थनगर। पिछले कई महीनों से अपनी बदहाली का रोना रो रही नगर मुख्यालय की सड़कें होने वाली बरसात में और ज्यादा बदहाल हो गई हैं। हाल यह है फिर नगर के मुख्य चौराहे और तहसील के आसपास की सड़कें ऐसी हालत में है कि अब उन पर पैदल चलना भी काफी दुश्वार हो रहा है। बताया जाता है कि आने वाली नगर पालिका चुनाव को देखते हुए यह सड़क अधूरी छोड़ दी गई है। मौजूदा नगर पालिका अध्यक्ष संभवत इस ओर ध्यान इसलिए नहीं दे रहे हैं की आने वाला नगरपालिका चुनाव सर पर है और अगला चुनाव का सेहरा किसके सर बंधेगा ,कहा नहीं जा सकता है।इसी आशंका को देखते हुए सड़क को बेहाल छोड़ दिया गया है। बताते चलें कि तहसील के आसपास नगर कि यह वही मुख्य सड़क है जिस पर प्रतिदिन अधिकारियों का आना–जाना भी तहसील में होता है। किंतु संभवतःआराम देह गाड़ियों में सफर करने वाले इनसे बेपरवाह हैं कि

नगर की आम जनता है इन सड़कों से कैसे गुजर रही है। आम नागरिकों में इस बात की भी चर्चा है कि मुख्यालय पर सड़कों को बेहतर बनाना ज्यादा जरूरी था ना कि पुराने नौगढ़ में पेडल बोट का की व्यवस्था कर लोगों को मनोरंजन प्रदान करने का दावा करना। हालांकि बताया जाता है कि इस मनोरंजन का भी लोग बहुत कम ही उपयोग कर रहे हैं क्योंकि वहां तक पहुंचने के लिए भी सड़कों का बेहतर होना आवश्यक है।

मेडिकल कॉलेज के निरीक्षण के दौरान आक्रोशित नजर आए उपमुख्यमंत्री

दैनिक बुद्ध का संदेश

सिद्धार्थनगर। रविवार को मेडिकल कॉलेज के निर्माणाधीन 300 शैय्या चिकित्सालय के निरीक्षण के दौरान काफी आक्रोशित नजर आते हुए उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य को कड़ी चेतावनी देते हुए मरीजों के साथ किसी प्रकार की लापरवाही ना करने की बात कही, इसी दौरान फायर सुरक्षा के पाइप की गुणवत्ता सही ना होने पर तुरंत बदलने का निर्देश भी दिया। आप को बता दे की उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने मेडिकल कालेज के अन्तर्गत निर्माणाधीन 300 शैय्या चिकित्सालय का निरीक्षण किया गया।निरीक्षण के दौरान उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने निर्माणाधीन 300 शैय्या चिकित्सालय के भवन देखा गया। निरीक्षण के दौरान फायर सुरक्षा हेतु लगे पाइप की गुणवत्ता ठीक न पाये जाने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए उसे बदलवाने का निर्देश दिया। इसके साथ ही भवन को निर्धारित समय में पूर्ण कराकर कर हैण्ड ओवर करने का निर्देश दिया। उपमुख्यमंत्री ने प्राचार्य मेडिकल कालेज को निर्देश दिया कि हैण्डओवर लेते समय गुणवत्ता की जांच कर ले। गुणवत्ता से समझौता नही होना चाहिए। इस दौरान सांसद डुमरियागंज जगदम्बिका पाल, विधायक बांसी जय प्रताप सिंह, विधायक कपिलवस्तु श्यामधनी राही, विधायक शोहरतगढ़ विनय वर्मा आदि मौजुद रहे।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

राष्ट्रीय दैनिक बुद्ध का संदेश

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458

संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा

सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा

9415163471, 9453824459

दैनिक बुद्ध का संदेश

9795951917,9415163471

@budhakasandesh

budhakasandeshnews@gmail.com

www.budhakasandesh.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर पुष्प अर्पित

दैनिक बुद्ध का संदेश

बर्डपुर। एकात्म मानववाद के प्रणेता, भारतीय जनसंघ के संस्थापक पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर रविवार को भारतीय जनता पार्टी बर्डपुर मंडल के सभी बूथों पर दीन दयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्प अर्पित कर कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारी ने उनकी जयंती मनाते हुए उन्हें नमन वंदन किया। वहीं इस दौरान संगठन द्वारा चलाए जा रहे सेवा पखवाड़ा के तहत बूथों पर बूथ समिति के कार्यकर्ताओं एवं जनमानस के संग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम को भी कार्यकर्ताओं ने सुना। इसी क्रम में बूथ संख्या 70 पर आयोजित कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष नितेश पाण्डेय एवं शक्ति केंद्र संयोजक विवेक गोस्वामी की अगुवाई में दीन दयाल उपाध्याय की जयंती एवं मन की बात का वृहद कार्यक्रम आयोजित हुआ । कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नितेश पाण्डेय ने कहा कि माँ भारती के गौरव को पुनर्स्थापित करने हेतु अपने जीवन का क्षण–क्षण खपाने वाले हमारे प्रेरणास्त्रोत पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर उन्हें नमन करते हुए बताया कि अपने राष्ट्रवादी चिंतन व सर्वसमावेशी विचार–दर्शन से उन्होंने पूरे विश्व को मानवता की सेवा और समस्याओं के समाधान का मार्ग दिखाया। दीनदयाल उपाध्याय का जीवन राष्ट्रीयता, त्याग, सेवा व समर्पण की अद्वितीय मिसाल है। केंद्र की मोदी एवं उत्तर प्रदेश की योगी सरकार अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को मुख्यधारा से जोड़कर उनके एकात्म मानववाद व अंत्योदय के सिद्धांतो को जमीन पर चरितार्थ कर रही है। उनका तपस्वी जीवन व आदर्श सदैव देश का पथ प्रदर्शन करते रहेंगे। वहीं क्षेत्र में अभिषेक कसौधन, सुरेंद्र यादव, अरविन्द उपाध्याय, संतोष उपाध्याय, सबलू साहनी, फूलचंद जयसवाल, मोहन चौधरी, रामबिलास मौर्या, अम्बरीष जयसवाल, किशोरिलाल जयसवाल, पवन पाठक, जेपी मौर्य, संजय मिश्रा, दयालू, पियूष उपाध्याय, राजेंद्र विश्वकर्मा, लक्ष्मण चौधरी, आदि के नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित हुए।

युवा विधायक विनय वर्मा ने उप मुख्यमंत्री का किया स्वागत

सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ विधानसभा से भाजपा की सहयोगी पार्टी अपना दल से युवा विधायक विनय वर्मा ने जनपद में प्रथम आगमन पर उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक को अंग वस्त्र देकर स्वागत किया साथ ही भगवान बुद्ध की धरती का प्रतीक बुद्ध की प्रतिमा भेंट किया, विधायक विनय वर्मा ने अपने विधानसभा क्षेत्र की समस्याओं से अवगत कराते हुए उपमुख्यमंत्री से तत्काल समाधान की मांग की युवा विधायक से मिलकर उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक काफी खुश नजर आए साथ ही उन्होंने शोहरतगढ़ विधानसभा की जो भी समस्याएं उनके पास आई हैं उनका समाधान करवाने का आश्वासन दिया आपको बता दें कि जनपद में जब भी कोई मंत्री आता है तो युवा विधायक विनय वर्मा सदैव आगे बढ़कर उनके स्वागत और अभिनंदन में आगे रहते हैं अभी कुछ दिन पहले ही जनपद भ्रमण पर आए खाद रसद मंत्री सतीश शर्मा एवं स्टांप शुल्क मंत्री का भव्य स्वागत विधायक विनय वर्मा के कैंप कार्यालय पर किया गया था इस दौरान उनके साथ उनके सहयोगी एवं पूर्व भाजपा मीडिया प्रभारी महेश वर्मा मौजूद रहे।

अनियमित पीरियड्स की समस्या से निजात पाने के लिए करें इन 8 चीजों का सेवन

पीरियड्स अर्थात माहवारी हर महिला के जीवन का खास चक्र है। इसी की बदौलत एक महिला को मातृत्व सुख मिल पाता है। इस दौरान महिलाओं के शरीर से खराब खून बाहर निकल जाता हैं। महिलाओं की सेहत को बनाए रखने में पीरियड्स का महत्वपूर्ण रोल हैं। कई बार महिलाएं अपनी माहवारी को लेकर बहुत परेशान हो जाती हैं क्योंकि समय निकल जाने पर भी उनका पीरियड नहीं आता है। अनियमित रूप से पीरियड्स होने के कारण कई बार हैवी ब्लीडिंग होती है वहीं कभी–कभी कम या न के बराबर ब्लीडिंग होती है। यह सेहत को प्रभवित करता हैं। ऐसे में किचन में मौजूद कुछ चीजें आपके लिए लाभकारी साबित हो सकती हैं जिनके सेवन से रुका हुआ पीरियड आ जाएगा और आपको कोई समस्या भी नहीं होगी। आइये जानते हैं इनके बारे में...

सोंठ और अजवाइन

पीरियड्स खुलकर नहीं होते तो रात को सोते समय आधा चम्मच अजवाइन के साथ गुनगुना हल्दी वाला दूध पीएं। इससे आपको पीरियड्स ठीक से आने लगेंगे। इसके अलावा आप गुड़ में चौथाई चम्मच सोंठ और चौथाई चम्मच अजवाइन को डालकर हल्दी वाले गुनगुने दूध के साथ लें। इससे भी पीरियड्स खुलकर आने लगेंगे।

अदरक

अदरक पीरियड्स लाने वाले सबसे ताकतवर उपायों में से एक है। यह बेहद गर्म होता है। हालांकि इसके साइड इफेक्ट्स भी हो सकते हैं। अदरक से गैस बनती है। हालांकि अगर आपके पीरियड्स काफी डिले हो गए हो तो अजवायन और अदरक की चाय ट्राए कर सकती हैं। इससे आपका काम हो जाएगा।

खड़ा धनिया

महिलाओं के रुके हुए पीरियड को लाने में खड़ा धनिया बहुत हद तक सहायक है। एक चम्मच खड़े धनिये को दो कप पानी में उबाल लें। जब पानी एक कप रह जाए तो गैस को बंद कर दें और उसे अच्छे से छान लें। इस पानी का दिन में तीन बार सेवन करें। यदि बराबर नियम से आप इसका सेवन करते रहेंगे तो यह माहवारी को लाने में बहुत प्रभावशाली रहेगा। पुराने समय से महिलाएं माहवारी को नियमित करने के लिए इस नुस्खे का प्रयोग करते आ रही हैं।

दालचीनीः दालचीनी का सेवन सेहत के लिए अच्छा होता है, इसके सेवन से खाने का स्वाद बढ़ता है, वहीं ये पीरियड्स में हो रहे दर्द को दूर करने में भी मदद करता है। दालचीनी का सेवन रोजाना करते हैं तो ये अनियमित पीरियड की समस्या को रेगुलर करने में में मदद करता है। वहीं खाली पेट दालचीनी के पानी का सेवन भी आप कर सकते हैं।

कच्चा पपीता

अनियमित पीरियड या फिर पीरियड न आने पर आपको अपनी डाइट में कच्चा पपीता शामिल करना चाहिए। कच्चे पपीते के सेवन से काफी फायद हो सकते हैं। दरअसल, यह गर्भाशय की मांसपेशियों के संकुचन को कंट्रोल किया जा सकता है। वहीं, कई रिसर्च में भी इस बात का दावा किया गया है कि कच्चा पपीता खाने से मासिक धर्म न होने की परेशानी को कम किया जा सकता है। इसके अलावा जिन लोगों को स्ट्रेस की वजह से पीरियड की परेशानी हो रही है, उनके लिए भी कच्चा पपीता काफी फायदेमंद होता है। क्योंकि कच्चा पपीता आपके स्ट्रेस को कंट्रोल करने में प्रभावी है।

सौंफ

सौंफ की सुंगधित चाय के इस्तेमाल से भी आप जल्द पीरियड्स ला सकते हैं। एक ग्लास पानी में 2 चम्मच सौंफ रात भर तक रखें और सुबह छान कर पी लें। खाली पेट सुबह सौंफ के इस पानी का प्रयोग करने पर यह ज्यादा फायदा देता है।

एप्पल साइडर विनेगर

पीरियड ना आने पर आप रोजाना सेब के सिरके का सेवन करें। इससे आपको बेहतर रिजल्ट मिल सकता है। रिसर्च में बताया गया है कि रोजाना 15 मिली एप्पल साइडर विनेगर का सेवन करने से पीसीओएस से ग्रसित महिलाओं की समस्या को कम किया जा सकता है। इससे पीरियड्स न आने की परेशानी दूर होती है। हालांकि, अभी इस पर और अधिक शोध की आवश्यकता है। आप इसे गर्म पानी में मिलाकर इसका सेवन कर सकते हैं। इसके अलावा इस पानी में आप शहद को भी मिला सकते हैं। इससे आपको काफी फायदा होगा।

हल्दी

हल्दी का सेवन सेहत के लिए बहुत ही ज्यादा अच्छा होता है, इसके सेवन से मानसिक ध ाार्मिक यानी पीरियड्स से कई समस्याएं दूर होती जाती है। हल्दी का सेवन अनेकों तरीकों से किया जा सकता है, इसे आप दूध के साथ, मसाले के रूप में आदि तरीकों से कर सकते हैं।

फातिमा सना शेख सैम बहादुर में अपनी भूमिका के लिए तैयार

फातिमा सना शेख विक्की कौशल की मुख्य भूमिका वाली सैम बहादुर के लिए पूरी तरह तैयार हैं। अभिनेत्री ने आगामी फिल्म में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की भूमिका निभाने के लिए तैयारी शुरू

कर दी है। अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर, फातिमा ने एक झलक साझा की कि वह कैसे इंदिरा गांधी की भूमिका के लिए तैयारी कर रही है। उन्होंने इंदिरा– द लाइफ आफ इंदिरा नेहरू गांधी नामक किताब की एक तस्वीर साझा की। फातिमा ने तस्वीर को कैप्शन दिया, उनके जीवन पर एक ऐसी दिलचस्प किताब। आधा रास्ता . इसकी अत्यधिक अनुशंसा करेंगी। उन्होंने बहुप्रतीक्षित फिल्म सैम बहादुर के सेट से आईने के सामने बैठी अपनी एक बीटीएस तस्वीर भी साझा की और लिखा, और यह हैशटैग–सैमबहादुर।काम के मोर्चे पर, सैम बहादुर के साथ, फातिमा की एक दिलचस्प लाइन–अप है और वह तापसी पन्नू, प्रांजल खंडडिया और आयुष माहेश्वरी द्वारा सह–निर्मित तरुण दुडेजा द्वारा निर्देशित और सह–लिखित धक धक में भी दिखाई देंगी।

लंबे समय से अटकी थी अक्षय कुमार की फिल्म गोरखा, अगले साल मार्च में शुरू हो रही शूटिंग

अक्षय कुमार की फिल्म गोरखा लंबे समय से अटकी हुई है। इस फिल्म की पिछले साल घोषणा हुई थी। हालांकि, घोषणा होने के बाद फिल्म को लेकर कोई भी अपडेट नहीं आया। लोगों को लगने लगा था कि फिल्म ठंडे बस्ते में चली गई है। आखिरकार अक्षय के प्रशंसकों के लिए अच्छी खबर आई है। इस फिल्म की शूटिंग अगले साल मार्च में शुरू हो जाएगी। यह फिल्म भारतीय सेना के गोरखा रेजिमेंट के अधिकारी इयान कार्डोजो की बायोपिक है।

फिल्म गोरखा के प्रोडक्शन का काम आनंद एल राय संभाल रहे हैं। यह अतरंगी रे और रक्षाबंधन के बाद आनंद और अक्षय का तीसरा कोलैबोरेशन है। अतरंगी रे पिछले साल डिज्नी हॉटस्टार पर रिलीज हुई थी। वहीं रक्षाबंधन इस साल अगस्त में रिलीज हुई थी। गोरखा का निर्देशन संजय पूरन सिंह करेंगे। संजय ने पिछले साल फिल्म बहत्तर हूरें के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता था।

रिपोर्ट्स के अनुसार निर्माता शूटिंग शुरू होने से पहले आश्वस्त होना चाहते हैं कि फल्म हकीकत के ज्यादा से ज्यादा करीब हो। वह इसके लिए हर तरह की तैयारी कर रहे हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार अब तक पर्दे पर जिस तरह से युद्ध दिखाए गए हैं, इस फिल्म में युद्ध का चित्रण उनसे बिल्कुल अलग होगा। निर्माता इयान के किरदार को पर्दे पर बखूबी दिखा सकें, इसके लिए वे ज्यादा से ज्यादा रिसर्च करना चाहते हैं।

इयान कार्डोजो एक पूर्व भारतीय सेना अधिकारी हैं। उन्होंने 1962, 65 और 71 में भारत–पाक युद्ध में हिस्सा लिया था। वह एक बटालियन और एक ब्रिगेड की कमान संभालने वाले भारतीय सेना के पहले युद्ध–विकलांग अधिकारी बने थे। भारत–पाक युद्ध में घायल होने के कारण कार्डोजो को अपना पैर काटना पड़ा था। कार्डोजो ने 2005 से 2011 तक भारतीय पुनर्वास परिषद के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है।

गोरखा के अलावा अक्षय कुमार कई प्रोजेक्ट में व्यस्त हैं। उनकी फिल्म राम सेतु अकसर सुर्खियों में रहती है। इस फिल्म में उनके साथ जैकलीन फर्नांडिस नजर आएंगी। अक्षय मलयालम फिल्म ड्राइविंग लाइसेंस की हिंदी रीमेक सेल्फी में नजर आएंगे। 1998 की फिल्म छोटे मियां बड़े मियां की रीमेक में अक्षय टाइगर श्रॉफ के साथ दिखेंगे। वह ओह माई गॉड के सीक्वल में भी काम कर रहे हैं। इस फिल्म में उनके साथ पंकज त्रिपाठी नजर आएंगे।

राणा दग्गुबाती ने रिलीज किया कन्नड़ एक्शन फिल्म कब्जा का टीजर

केजीएफ 2, 777 चार्ली और विक्रांत रोना की हालिया बैक–टू–बैक सफलताओं के बाद, कन्नड़ फिल्म उद्योग एक और प्रमुख एक्शन एंटरटेनर शुरू करने के लिए पूरी तरह तैयार है, जिसमें एक आल–स्टार कास्ट कब्जा है।

आर चंद्रू द्वारा निर्देशित फिल्म में कन्नड़ पुरस्कार विजेता स्टार उपेंद्र राव, किच्चा सुदीप, श्रिया सरन, मनोज वाजपेयी और नवाब शाह हैं। इसे सात भाषाओं में रिलीज करने की तैयारी है।

आर चंद्रू द्वारा निर्देशित फिल्म में कन्नड़ पुरस्कार विजेता स्टार उपेंद्र राव, किच्चा सुदीप, श्रिया सरन, मनोज वाजपेयी और नवाब शाह हैं। इसे सात भाषाओं में रिलीज करने की तैयारी है।

मेकर्स ने उपेंद्र के बर्थडे से एक दिन पहले फिल्म का टीजर रिलीज किया था। इसे बाहुबली स्टार राणा दग्गुबाती ने रिलीज किया, जो पूरे भारत में एक लोकप्रिय नाम बन गए है।

कब्जा 1947 से 1984 के बीच भारत में गैंगस्टरों के उदय के बारे में एक पीरियड फिल्म है। यह एक स्वतंत्रता सेनानी के बेटे के बारे में है जो माफिया की दुनिया में फंस जाता है। फिल्म को एक बड़े पैमाने पर एक्शन फिल्म के रूप में बनाया गया है।

फिल्म के बारे में बात करते हुए, निर्देशक चंद्रू ने कहा, फिल्म पहले ही काफी चर्चा में है और हम टीजर के साथ अपने प्रशंसकों का खुश करना चाहते थे। कल उपेंद्र का जन्मदिन है, हमने सोचा कि यह उनके सभी प्रशंसकों के लिए एक अच्छा उपहार होगा।

एम.टी.बी. द्वारा प्रस्तुत, नागराज, और श्री सिद्धेश्वर एंटरप्राइजेज बैनर के तहत चंद्रू द्वारा निर्मित, फिल्म कन्नड़, हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, उडिया और मराठी में रिलीज होगी।

फिल्म का संगीत केजीएफ फेम रवि बसरूर ने दिया है, ए. जे. शेट्टी छायाकार हैं और महेश रेड्डी संपादक हैं।

पुरानी सलवार से मिलेगा स्टाइलिश लुक

रतीय पारंपरिक कपड़ों में भी महिलाओं के पास कई विकल्प होते हैं। रोजमर्रा से लेकर कॉलेज, ऑफिस और पार्टी वियर में अधिकतर महिलाएं पारंपरिक कपड़ों में सलवार कुर्ता कैरी करती

हैं। अधिकतर भारतीय लड़कियों और महिलाओं के वार्डरोब में सलवार सूट आसानी से मिल जाएंगे। सलवार सूट आरामदायक पोशाक होने के साथ ही आसानी से कहीं भी कैरी किया जा सकता है। घर पर रहने पर इसे साधारण कपड़ों की तरह तो बाहर स्टाइलिश और ट्रेडिशनल आउटफिट की तरह भी पहने मिल जाती हैं। अक्सर कुर्ते के साथ लड़कियां सलवार की जगह जींस, पैंट, प्लाजो को पहनकर अपने लुक और स्टाइल में बदलाव करती रहती हैं। ऐसे में कई बार लड़कियां की सलवार वार्डरोब में ऐसे ही रखी रह जाती है और पुरानी हो जाती है। लेकिन अगर आप अपनी पुरानी सलवार को दोबारा इस्तेमाल करना चाहते हैं तो यहां आपको कुछ स्टाइलिश टिप्स दिए जा रहे हैं। पुरानी सलवार को स्टाइलिश स्कर्ट में बदलने के टिप्स नोट कर लें।

इस तरह करें दोबारा इस्तेमाल

सलवार से स्कर्ट बनाने के आसान टिप्स

सबसे पहले सही सलवार का चुनाव करें, जिसकी डिजाइन और प्रिंट स्कर्ट बनने पर अच्छी लग सकती है। अब सलवार को उल्टा करके अपनी नाप के हिसाब से चौक की मदद से निशान लगा लें। निशान के मुताबिक कुछ जगह छोड़ते हुए सलवार की कटिंग करें। अगले स्टेप्स में सलवार के कपड़ों को जोड़ते हुए सिलाई करनी है। टुकड़ों को एक साथ रखते हुए किनारों पर सिलाई मशीन से सिलाई कर लें। अगर आप कटिंग और सिलाई में अच्छे नहीं हैं तो किसी टेलर या बुटीक में भी अपनी डिजाइन के मुताबिक सलवार को स्कर्ट में बदल सकते हैं।

साधारण स्कर्ट

इन दिनों प्लीटेड स्कर्ट काफी ट्रेंड में है। ऐसे में अगर आपके पास साधारण सलवार है तो आप उसे प्लीटेड स्कर्ट में बदल सकते हैं। अपनी पुरानी सलवार के नीचे के हिस्से की सिलाई को खोल दें और ऊपर से सलवार की बेल्ट को अलग कर दें। अब सलवार के नीचे के दोनों हिस्सों को आपस में जोड़ते हुए फिटिंग के हिसाब से दोनों हिस्सों में सिलाई करा लें। ऊपर से भी सलवार की बेल्ट को स्कर्ट के मुताबिक जोड़ लें।

शॉर्ट स्कर्ट

कैजुअल से लेकर पार्टी वियर में शॉर्ट ड्रेस का चलन बढ़ा है। ऐसे में आप अपनी किसी प्रिंटेड सलवार या सिंपल प्लेन सलवार से शॉर्ट स्कर्ट डिजाइन करके उसे किसी भी मौके पर पहन सकते हैं। इसके लिए अपनी सलवार के ऊपर के हिस्से का इस्तेमाल करें। सलवार की बेल्ट से ही छोटी सी स्कर्ट आसानी से बना सकते हैं। लेस से डेकोरेट कर सकती हैं।